चन्दामामा
मई १९६९
75 P

Chandamama
Press
VADAPALANI
MADRAS 26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of others....

इनको **लाल-शेर** पिलाइये

(डाबर बालामृत)

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०, कलकत्ता-२९

चन्दामामा

मई १९६९

कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये !

क्यों कि :-एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेंटल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है, और कोलगेट-विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का...अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

DC.G.38 HN

लाइफ़बॉय

है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ

लाइफ़बॉय मैल में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है
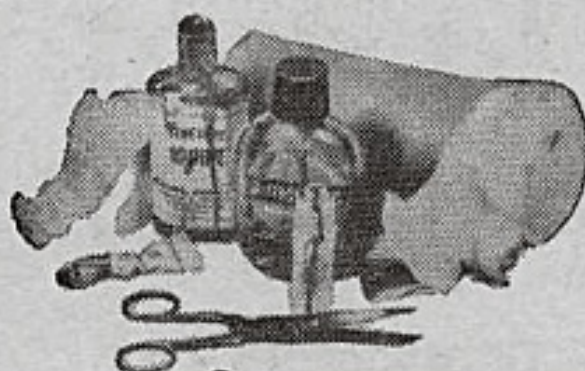
कभी
उंडेले
हंसते दिन
फ़ैण्टा ऑरेंज
क्या कहने ...
जी चाहता है
प्यास लगे !
फ़ैण्टा, कोका-कोला कम्पनी का उत्पादन है
CMCF-3-152-HIN

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

इस अंक में हम "खज़ाने का चोर" नामक जो कहानी दे रहे हैं, यह कहानी इसके पूर्व दूसरे रूप में प्रकाशित हो गयी थी, ऐसी कहानियाँ तो विश्वसाहित्य में काफ़ी संख्या में भरी पड़ी हैं। परंतु इस अंक में हम जो यह कहानी दे रहे हैं, यह उन सभी कहानियों का मूल रूप है। यह ईजिफ़्ट की कहानी है। प्राचीन सभ्यताओं में मिश्र या ईजिफ्ट की सभ्यता का अपना विशेष स्थान है। अत: हमने मूल रूप देना उचित समझा।

वर्ष: २० मई १९६९ अंक: ९

ख़ज़ाने का चोर

आज से तीन हज़ार साल पूर्व तृतीय रामिसिस नामक राजा मिश्र की गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल में मिश्र सुखी और संपन्न था। इसलिए रामिसिस ने अपने पूर्व राजाओं की अपेक्षा ज्यादा धन इकट्ठा किया। वह ज्यों ज्यों सोना, चाँदी, हीरे और जवाहरातों का संग्रह करने लगा, त्यों त्यों उसमें धन के प्रति लोभ भी बढ़ता गया। इसलिए उसने एक मशहूर शिल्पी को बुलाकर पत्थरों से एक मज़बूत ख़ज़ाने का निर्माण करवाया और उसमें एक गुप्तद्वार का भी इंतज़ाम कराया। उस गुप्तद्वार का रहस्य केवल राजा जानता था। राजा जब तब उस गुप्तद्वार से ख़ज़ाने के अंदर जाता और लौटते समय उस पर मुहर लगा देता।

उस खज़ाने का निर्माण करनेवाला शिल्पी बड़ा होशियार था। उसने राजा से भी छिपाकर ख़ज़ाने के पत्थर की दीवार में एक गुप्त पत्थर का दर्वाज़ा बिठाया और उसमें पहुँचने के लिए एक रास्ता भी छोड़ रखा था। इसके बाद ख़ज़ाने के ऊपर एक पिरामिड़ बनाया। खज़ाने के बनाने के बाद वह शिल्पी ज़्यादा दिन ज़िंदा न रहा; लेकिन मरने के पहले उसने ख़ज़ाने से थोड़ा धन चुराया था। मरते समय उसने अपने दोनों बेटों को पास बुलाकर उनको उस गुप्तद्वार का रहस्य बता दिया। अपने पिता के मरने के बाद वे दोनों भाई जब तब खज़ाने में पहुँच जाते और थोड़ा-थोड़ा करके धन चुरा लाते थे। राजा लगभग रोज़ ख़ज़ाने में जाकर उसकी जाँच कर लेता था। इसलिए उसने भांप लिया कि खज़ाने के धन की चोरी हो रही है। उसने देखा, गुप्तद्वार पर वह जो मुहर

उमाकान्त शुक्ल

लगा देता था, वह ज्यों की त्यों क़ायम रहती थी। ख़ज़ाने की दीवारों से चींटी तक घुसकर आ नहीं सकती थी। ऐसी हालत में राजा की समझ में नहीं आया कि किस रास्ते से चोर अन्दर आ रहे हैं! चाहे किसी रास्ते से क्यों न हो, चोर आते हैं, इसलिए उनको फँसाने के लिए राजा ने ख़ज़ाने में कैंचीवाला पिंजड़ा बिठा दिया।

एक दिन जब दोनों भाई पत्थर के दर्वाज़े को हटाकर ख़ज़ाने में पहुँचने लगे; तब बड़े भाई का पैर कैंचीवाले पिंजड़े में फँस गया। अंधेरा था, इसलिए वह उस पिंजड़े को देख नहीं पाया। बड़ी कोशिश करके भी वह अपने पैर को छुड़ा नहीं पाया। इसलिए उसने अपने छोटे भाई से कहा–"भैया, मैं पिंजड़े में फँस गया हूँ। मेरा मरना निश्चित है। कल राजा मुझे देख पहचान लेगा तो तुम्हारी मौत भी निश्चित है। दोनों मरकर माँ को पुत्र-शोक का शिकार क्यों बनावें? वह अकेली तड़पकर मर जायगी। तुम मेरा सर काटकर ले जाओ। तब मुझे कोई पहचान न पावेगा। मैं भी निश्चिंत हो मर सकूँगा।"

बड़े भाई की बातों में जो विवेक भरा था, उसे छोटे के समझते देर न लगी। उसने अपने बड़े भाई का सर काटकर दर्वाज़ा पहले की तरह बंद किया, घर पहुँचकर सारी बातें अपनी माँ को बतायीं। इसके बाद भाई का सर दफ़ाना दिया।

दूसरे दिन राजा जब ख़ज़ाने में पहुँचा, तब उसने एक चोर के धड़ को देखा। उस पर न कपड़े थे और न सर था। चोर का पता लगाना मुश्किल था। वह कैसे भीतर आया, यह भी राजा की समझ में न आया। लेकिन राजा ने यह जान लिया कि एक और चोर है जो पिंजड़े में फँसे

चोर का सर काटकर ले गया है। उसको पकड़ने का राजा ने पक्का इरादा कर लिया। राजा ने मरे हुए उस चोर का धड़ क़िले की दीवार पर लटकवा दिया। उस पर पहरा बिठाकर पहरेदारों को आदेश दिया—"इस धड़ को ले जाने की कोई कोशिश करे या इसे देख किसी की आँखों में आँसू आये, तो उसे पकड़कर मेरे सामने ले आओ।"

अपने बड़े बेटे के धड़ को क़िले की दीवार पर लटकने की खबर सुनकर चोरों की माँ ने अपने छोटे लड़के से कहा—"मेरे पुत्र की लाश अंत्येष्टि क्रियाओं के बिना लटकती रहे तो उसकी आत्मा पितृलोक में कैसे पहुँचेगी? वह भूत बनकर पृथ्वी पर चक्कर काटता रहेगा। इसलिए तुम उसकी लाश लेते आओ। नहीं तो, मैं खुद राजा के पास पहुँच कर प्रार्थना करूँगी।"

"माँ! सभी अंगों में सर ही मुख्य है। मैंने उसे शास्त्र सम्मत दृष्टि से दफ़नाया है।" छोटे लड़के ने अपनी माँ को समझाया। लेकिन उसने हट किया। तब अपने भाई के शव को किसी न किसी रूप में लाना उसके लिए अनिवार्य हो गया।

छोटा भाई एक बूढ़े व्यापारी का वेश धरकर एक गधे पर शराब से भरी दो चमड़े की थैलियाँ लादे, गधे को हाँकते क़िले के दर्वाज़े की ओर निकला। शव के लटकनेवाली जगह पर पहुँचते ही उसने एक थैले में छेद किया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। उसके रोते-चिल्लाते देख पहरेदार दौड़े आये और पूछने लगे—"क्या हुआ बूढ़े दादा! रोते क्यों हो?"

"मेरी सारी शराब छूती जा रही है। बहुत क़ीमती शराब है!" उसने पहरेदारों से कहा। उसने यह भी बताया कि दूकान

तक पहुँचते-पहुँचते सारी शराब छू जायगी, इसलिए उसे पी लेना ही बेहतर होगा। यह बात सुनकर पहरेदारों ने चख कर सारी शराब खुशी से पी डाली।

"यह दूसरा थैला गधे की पीठ पर टिक नहीं सकता, इसे भी तुम लोग पी जाओ!" व्यापारी ने समझाया।

दूसरे थैले की शराब भी पीकर पहरेदार नशे में आ गये। अंधेरा फैल गया था। छोटा भाई अपने बड़े भाई की लाश को गधे पर लादकर उस पर थैले रखकर घर चला गया। फिर अपनी रीति के अनुसार उसे दफ़नाया।

लाश के चोरी जाने का समाचार सुनकर राजा गुस्से में आया। अपने कर्त्तव्य के पालन में पहरेदारों को असावधान देख उनको राजा ने कोड़े लगवाकर दण्ड दिया। चोर को पकड़ने का इरादा राजा के मन में और भी दृढ़ हो गया। इसलिए उसने एक योजना बनायी। अपनी पुत्रियों में से एक को विदेशी पोशाकें पहनाकर नगर के दर्वाज़े के बाहर उसके ठहरने का इंतज़ाम किया। उस नारी ने यह घोषणा की कि जो व्यक्ति भयंकर काम और बुद्धिकौशल के कार्य कर चुका हो, उसी के साथ वह शादी करेगी।

छोटे को मालूम हुआ कि उसे पकड़ने के लिए राजा ने यह जाल रचाया है। वह यह साबित करने के लिए अंधेरा होते ही राजकुमारी को देखने चला कि वह युक्ति में राजा से कम नहीं है। चलते-चलते उसने वध्यस्थान में उसी दिन फाँसी पर लटकाये गये एक अपराधी का हाथ काट डाला और उसे अपनी शाल के अन्दर छिपाये चल पड़ा।

राजकुमारी के पास पहुँचकर उसने बताया कि वह उससे शादी करने आया है। तब राजकुमारी ने उससे पूछा–"तुमने अपनी ज़िन्दगी के भीतर कौन-सा बड़ा साहसपूर्ण कार्य किया है? बुद्धिकौशल से कौन-सा काम किया है?"

उसने समझाया कि उसने अपने बड़े भाई के सर को साहस के साथ काट डाला और उसके धड़ को युक्ति के साथ उड़ाकर भाग गया। राजकुमारी ने समझ लिया कि उसका पिता इसी व्यक्ति की खोज में है। यह सोचकर उसने कहा–"अच्छी बात है, मैं तुमसे शादी करूँगी, ज़रा अपना हाथ तो दो।" छोटे ने शाल के भीतर से शव का हाथ बढ़ाया। राजकुमारी उस हाथ को ज़ोर से पकड़कर चिल्ला उठी–"चोर मिल गया! चोर मिल गया! आओ पकड़ो!"

पहरेदार दौड़े आये। चोर शव के हाथ को छोड़ पिछवाड़े की ओर भाग गया और अंधेरे में ओझल हो गया।

राजा को जब मालूम हुआ कि चोर हाथ में आकर भी भाग गया है, उसकी चालाकी और हिम्मत पर प्रसन्न होकर उसने घोषणा की कि अगर चोर खुद आकर अपना परिचय दे तो उसे दण्ड न देकर अपनी बेटी के साथ उसका विवाह करेगा और उसे अपना दरबारी बनायेगा। इस तरह चोर राजा का दामाद और सरदारों में एक सरदार भी बन बैठा।
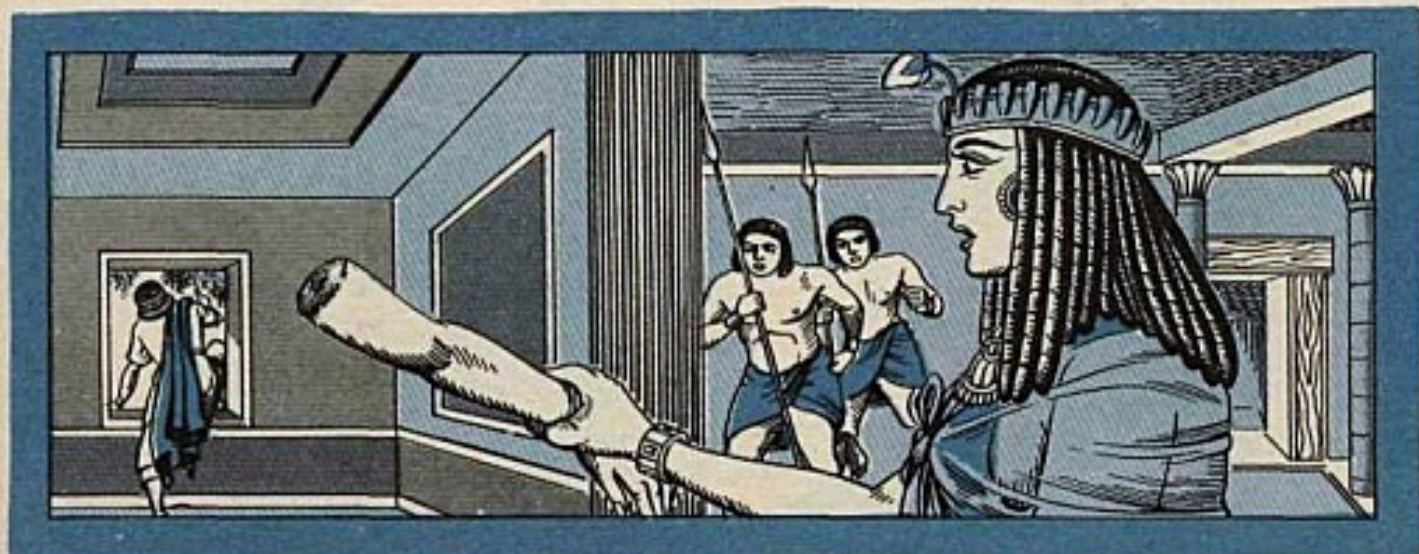
कोई नहीं बचता

एक राजा के बगीचे में एक अनोखा गुलाबी पौधा था। साल में एक बार उसमें एक कली लगती, लेकिन उसके खिलने के पहले क़ीड़ा उसे खा लेता। कई माली बदल दिये गये, लेकिन गुलाब की कली को कीड़े के काटने से कोई रोक न सका। आखिर एक माली आया, उसने कहा कि अगर वह गुलाब की कली को कीड़े से न बचा सकेगा तो उसका सर काटा जाय।

माली जिस महीने नौकरी पर लगा, उसी महीने में गुलाब के पौधे में कली निकली। दूसरे दिन वह कली खिलनेवाली थी। उस रात को माली उसके पास ही बैठे जाग रहा था। सवेरा होने के थोड़ी देर पहले एक कीड़ा आकर पौधे पर बैठ गया। लेकिन माली जब उसे मारने लगा तब एक चिड़िया आकर उस कीड़े को उड़ा ले गयी। थोड़ी देर बाद गुलाब की वह कली खिल उठी। सचमुच वह सुंदर फूल था। माली ने बड़ी खुशी से उसे ले जाकर राजा के हाथ दिया।

"तुमने कैसे बचाया?" राजा ने पूछा।

"कीड़े को मारने के पहले ही कोई चिड़िया उसे उड़ा ले गयी, महाराज!" माली ने उत्तर दिया। राजा ने गहरी साँस लेकर कहा–"कीड़े को चिड़िया उड़ा ले गयी, कल उस चिड़िये को कोई दूसरा प्राणी खा बैठेगा! कोई नहीं बचता!"

दूसरे साल गुलाब के पौधे में फिर कली निकली। उसके खिलते समय बगीचे का माली पहरे पर बैठा था। इस बार भी कीड़ा आया। उसके कली पर बैठने के पहले ही चिड़िया उसे उड़ा ले जाकर ज़मीन पर बैठ गयी। दूसरे ही पल में बिल से एक साँप आया, उसने चिड़िये को पकड़ लिया।

प्रकाश कुमार

माली ने राजा को गुलाब का फूल देते हुए जब यह समाचार सुनाया, तब राजा ने गहरी साँस लेकर कहा—"मैंने कहा था न कि इस बार वह साँप भी न बचेगा।"

अगले साल भी गुलाब की कली के वास्ते कीड़ा आया। उस कीड़े को एक चिड़िये ने पकड़ लिया। उस चिड़िये को साँप ने पकड़ा। माली ने उस साँप को अपनी लाठी से दे मारा।

माली से राजा ने सारी बातें सुनकर कहा—"मैंने कहा था न, साँप भी न बचेगा! कोई न बचेगा।" इस बार राजा की बात ने माली के दिल को तिलमिलाया।

एक दिन माली एक पेड़ पर बैठे फलों पर कपड़े बांध रहा था। तब रानी अपनी सखियों के साथ वहाँ आ पहुँची। वहाँ पर संगमरमर के पत्थरों से बना एक तड़ाग था। सबने कपड़े उतारकर तड़ाग में नहाया। माली यह सोचकर पेड़ से लगकर बैठा रहा कि कहीं रानी उसे देख न पावे। लेकिन नहा चुकने के बाद तड़ाग से बाहर आते रानी ने माली को देखा। उसने राजा से शिकायत की। इस पर गुस्से में आकर माली का सर काटने का आदेश दिया।

राजभट माली को राजा के पास ले आये। माली ने राजा को प्रणामकर कहा—"महाराज! आपका कहना बिलकुल सत्य है! गुलाब की कली को खानेवाला कीड़ा नहीं बचा, वह चिड़िया के हाथों में मर गया। लेकिन वह चिड़िया भी बच न पायी, क्योंकि उसे सांप ने खा डाला। साँप भी बच न सका, वह मेरे हाथों मारा गया। मैं भी बच नहीं पा रहा हूँ, आपके हाथों में मारा जा रहा हूँ। कोई बच नहीं सकता, यही सत्य है।"

माली की बातें सुनते ही राजा का शरीर काँप उठा। उसने माली की सज़ा रद्दकर उसे फिर नौकरी पर रख लिया।

शिथिलालय

[१६]

[शेर के आक्रमण से डरकर गोंड लोग अलावों के निकट से भाग गये। बहुत ढूंढ़ने पर भी शिखिमुखी को नागमल्ली का पता न चला। भूतों के नेता ने उसे बताया था कि शिथिलालय का पुजारी नागमल्ली को लेकर भाग गया है। रस्से की मदद से पहाड़ से घाटी में उतरनेवाले पुजारी का शिखिमुखी ने पीछा किया। इसके बाद–]

शिखिमुखी ने घाटी में उतरकर देखा। उसे पुजारी और नागमल्ली को चटाई की लपेट में पीठ पर ढोनेवाला सवरगीध ये दोनों दिखायी नहीं पड़े। वे लोग उससे थोड़ी देर पहले ही घाटी में उतर सके थे, शिखिमुखी ने चारों ओर नजर दौड़ायी तो उसे थोड़ी दूर पर घोड़े की हिनहिनाहट सुनायी दी। तुरंत वह उस ओर दौड़ पड़ा। अंधेरे में उसे घोड़ा तो दीख नहीं पड़ा, मगर घोड़े की टापों की ध्वनि दूर होती लगी।

शिखिमुखी हताश हो सोचता रहा कि अब क्या किया जाय! विक्रमकेसरी रस्से की मदद से घाटी में उतर उसके निकट पहुँचा और पुकारा–"शिखी!"

उस पुकार को सुनकर शिखिमुखी चौंक पड़ा और पीछे घूमकर देखा। विक्रमकेसरी ने उसके कंधे पर हाथ रखते

हुए पूछा–"क्यों वह दुष्ट हाथ नहीं लगा?"

"अरे भाई, हाथ लगने की बात नहीं, वह दिखायी तक नहीं देता। दूर पर घोड़े के दौड़ने की आवाज़ सुनी।" शिखिमुखी ने जवाब दिया।

"पुजारी या नहीं तो सबरगीध, नागमल्ली को घोड़े की पीठ पर डालकर भाग गया होगा। यदि यह बात सच है तो उस पुजारी की मदद करनेवाले कुछ लोग इस प्रदेश में होंगे। वरना उनको घोड़ा कहाँ से मिलता?" विक्रमकेसरी ने अपनी शंका प्रकट की।

"हो सकता है, पर हमें बेकार समय काटना उचित नहीं, आस-पास में उनकी खोज करेंगे। हमारे साथी पहाड़ उतरकर आ रहे हैं।" शिखिमुखी ने कहा।

"आ तो रहे हैं, लेकिन उनके यहाँ पहुँचने में थोड़ा समय लगेगा। घोड़े की टापों की आवाज़ तुमने किस दिशा में सुनी?" विक्रमकेसरी ने पूछा।

शिखिमुखी ने पास के पेड़ों की ओर हाथ का इशारा किया। दोनों चुपचाप उस ओर निकल पड़े। वह प्रदेश घाटी से थोड़ी ऊँचाई पर था। उस घने अंधेरे में भी पेड़ों के बीच उन्हें एक पगडंडी दिखायी दी। उस पगडंडी से होकर जब वे दोनों थोड़ी दूर और आगे बढ़े, तब उन्हें पगडंडी के बाजू में झाड़ियों की आड़ में रोशनी दिखायी पड़ी।

शिखिमुखी ने रोशनी की ओर इशारा किया और विक्रमकेसरी से कहा–"लगता है, कोई उन झाड़ियों के पीछे अलाव जलाये बैठे हैं। जंगली जानवरों के डर से इस प्रदेश में चोर-डाकू भी रात के समय अलावों के सामने बैठ जाते हैं। हम इन लोगों का पता लगायेंगे।" यह कहते शिखिमुखी झाड़ियों की ओर दबे

पांव आगे बढ़ा। विक्रम उसके पीछे चलता गया।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी जब अलाव के पास की झाड़ियों के पीछे पहुँचे, तब उन्हें वहाँ दो आदमी दिखायी दिये। उनकी पोशकों से स्पष्ट मालूम होता था कि वे दोनों जंगली डाकू हैं। वे सब कुछ भूल एक कपड़े में बिछे चांदी के सिक्कों को गिन रहे थे।

शिखिमुखी ने विक्रमकेसरी को डाकुओं के पीछे की झाड़ी में छिप जाने का आदेश दिया और वह एक कटार निकालकर डाकुओं के सामने पहुंचकर गरज उठा—"वहाँ से हिलो नहीं, खबरदार!"

दोनों डाकू चौंककर तलवार खींचने को तैयार हुए, पर शिखिमुखी को देख सहमकर देखते ही रह गये। इस बीच विक्रमकेसरी झाड़ी में से निकलकर डाकुओं के पीछे आया, तलवार को उनकी गरदनों पर हिलाते हुए हुंकार कर उठा—"सावधान! यहाँ से भागने की कोशिश न करो।"

इस चेतावनी को पाकर डाकू स्तम्भित रह गये। शिखिमुखी ने उनके निकट पहुँचकर उनके म्यानों से तलवारें खींचकर दूर फेंक दीं और पूछा—"शिथिलालय का

पुजारी कहाँ? जल्दी बताओ। वरना जान से हाथ धो बैठोगे!"

यह सवाल सुनकर एक ने अपना चेहरा इस तरह बनाया, मानों वह इसकी बाबत कुछ नहीं जानता है और बोला—"शिथिलालय का पुजारी? हमने तो कभी वह नाम तक नहीं सुना?"

"तुम लोगों ने उस नाम को सुना ही नहीं, बल्कि उससे चाँदी के ये सिक्के भी लिये हैं! हमें धोखा देने की कोशिश न करो।" शिखिमुखी ने कहा। फिर विक्रम की ओर मुड़कर बोला—"केसरी! इन लोगों से सच्ची बात कहलाना कोई

मुश्किल की बात नहीं, जो डाकू भागने की कोशिश करेगा, उसे बेरहमी से तलवार के घाट उतारो!" यह कहकर शिखिमुखी ने एक डाकू के सर पर से साफ़ा निकाला और उस कपड़े से उसके हाथ बांध दिये।

"अब सच्ची बात बताओगे, समझे!" ये शब्द कहते शिखिमुखी अलाव में से एक जलती लकड़ी उठा लाया और एक डाकू की ओर आगे बढ़ा।

ख़तरे की कल्पनाकर डाकू घबरा गया और रोते हुए बोला–"हुज़ूर! मुझे जलाकर मार न डालो! मैं सच्ची बात बता देता हूँ। हम पुजारी को बिलकुल नहीं जानते! हमने उसे एक घोड़ा बेच दिया। उसने हमें जो रक़म दी, वही रक़म बाँट रहे हैं।"

"अच्छा, तुम यही जानते हो! तुम्हारा दोस्त कुछ और जानता होगा!" यह कहते शिखिमुखी जलती लकड़ी को दूसरे डाकू के कंधे तक ले गया।

दूसरा डाकू चीख़ उठा और बोला–"सरकार, मुझे ज़िंदा न जलाओ! सच्ची बात कहे देता हूँ। उस पुजारी के साथ एक मोटा तगड़ा आदमी भी था। वह एक चटाई में लपेटी एक व्यक्ति को लाया। पुजारी उसे घोड़े पर डाल जंगल की ओर भाग खड़ा हुआ। बस, हम यही जानते हैं।"

"नहीं, तुम लोग और कुछ जानते हो! विक्रम, तुम भी एक जलती लकड़ी ले आओ।" शिखिमुखी ने कहा।

विक्रमकेसरी अलाव में से जलनेवाली एक लकड़ी उठा लाया और पहले डाकू के निकट पहुँचकर बोला–"पीठ जलाने के बदले सर जलायेंगे तो इनको थोड़ा आराम मिलेगा।" यह कहते विक्रमकेसरी जलती लकड़ी को पहले डाकू के सर पर रखने गया।

CHITRA

जलती लकड़ी भी छीन ली और दोनों डाकुओं के सरों पर घुमाने लगा।

"हुज़ूर! हमको बचाइये। इससे ज्यादा हम कुछ नहीं जानते!" चोर दहाड़ मार रहे थे। शिखिमुखी ने विक्रमकेसरी को रोकते हुए कहा—"ऐसा मालूम होता है कि ये लोग सच बता रहे हैं। चांदी के सिक्कों के लोभ में पड़कर इन लोगों ने पुजारी के हाथ अपना घोड़ा बेच दिया है।" यह कहकर डाकुओं की ओर मुड़ा और शिखी बोला—"अच्छा, तुम लोग चले जाओ, लेकिन याद रखो, जब कभी वह पुजारी या सवरगीध तुमको दिखायी पड़े तो तुरंत शबरबस्ती में जाकर सूचना दो! ऐसा न करोगे तो तुम्हारी चमड़ी उधेड़ दूंगा।"

"हुज़ूर! आपने हमारी जान बचायी। हम क़सम खाते हैं कि अगर हमको पुजारी दिखायी दिया, तो उसी वक़्त हम यह ख़बर शबरबस्ती में देंगे!" डाकुओं में से एक ने कहा।

शिखिमुखी ने स्वीकृतिसूचक सर हिलाया। विक्रमकेसरी के साथ थोड़ी दूर आगे जाकर रुका और बोला—"विक्रम! मुझे संदेह होता है कि इन

डाकू थर-थर काँपते हुए बोला—"हुज़ूर! हमको न सताइयेगा! हम जो कुछ जानते हैं, सब बता देते हैं। वह पुजारी और मोटा आदमी जो बातें कर रहे थे, उनसे हमको यही मालूम हुआ कि वे रात ही रात यहाँ से निकलकर ब्रह्मपुत्र की नदी की घाटियों में जा रहे हैं। मैं सच कहता हूँ, पहाड़ी देवता की गवाही लेकर कहता हूँ।"

"शिखी, ये बेवकूफ़ समझते हैं कि ब्रह्मपुत्र की घाटी यहीं कहीं पास में है। बदन जलेगा तभी ये सच बोलेंगे!" यह कहकर शिखी ने विक्रम के हाथ की

डाकुओं ने हमसे एक बात छिपायी है। यह सच है कि इन लोगों ने पुजारी को घोड़ा बेच दिया है, लेकिन यह बात मैं नहीं मान सकता कि ये लोग पुजारी का पता नहीं जानते। जान का डर दिखाने पर भी ये लोग झूठ-मूठ कहकर हमको बहका सकते हैं। इसलिए मैं उनका पीछा करके असली बात का पता लगाना चाहता हूँ। तुम यहीं रहकर हमारे अनुचरों के आते ही उनको पुजारी को ढूंढ़ने चारों ओर भेज दो और तुम यहीं पर मेरा इंतज़ार करो।"

विक्रमकेसरी ने शिखी की बात मान ली। तुरंत शिखिमुखी डाकुओं का पीछा करते झाड़ियों में छिपा रहा। डाकुओं ने चाँदी के सिक्के बांटकर गठरियाँ बांध लीं। कमर में गठरियों को लटकाकर झाड़ियों में अपनी तलवारें ढूंढ़ निकालीं, फिर हँसते हुए दोनों पगडंडी से होते हुए आगे बढ़े। शिखी भी चुपचाप उनका अनुसरण करने लगा।

विक्रमकेसरी इधर-उधर टहलते अपने अनुचरों की प्रतीक्षा करता रहा। पंद्रह मिनट बीत गये। हठात् उसे घाटी में कुत्ते के भूंकने की आवाज़ सुनायी पड़ी। उसने समझ लिया कि वह आवाज़ शिखी के शिकारी लाल कुत्ते की है। इसका मतलब है कि शबरबस्ती से शिवाल या नहीं तो शिखी के रिश्तेदार उधर से आ रहे हैं।

विक्रम झट कुत्ते के भूंकने की दिशा में आगे बढ़ा। थोड़ी ही देर में उसने देखा कि शिवाल, सवर नेता लट्टूसिंह और चार-पांच शबर और सवर घाटी पर चढ़ते चले आ रहे हैं। एक शबर लाल कुत्ते के गले की रस्सी पकड़े हुए है। कुत्ता रस्सी को खींचते आगे दौड़ने को छटपटा रहा है।

शिवाल ने विक्रमकेसरी को देखते ही पूछा–"विक्रम! कुशल हो न? शिखी कहाँ? यह सच है कि नागमल्ली को क्या दुष्ट पुजारी उठाकर भाग गया है?"

विक्रमकेसरी जवाब देने जा रहा था कि इतने में सवर नेता लट्टूसिह आवेश में आकर गरज उठा–"उस पुजारी का जान के साथ चमड़ा उधेड़वा देता हूँ। वह कहाँ पर है?"

शिवाल ने उसका कंधा पकड़कर शांत स्वर में कहा–"जल्दी न मचाओ, लट्टूसिह! पहले मुझे असली बात समझ लेने दो न?"

विक्रमकेसरी ने जंगल में प्रवेश करने की बात से लेकर गगनगुफ़ा का समाचार संक्षेप में सुनाया और कहा कि शिखी लुटेरों का पीछा करते चला गया है।

"अकेले जंगली डाकुओं का पीछा करना ख़तरनाक है। लेकिन फिर भी शिखी ने अक़्लमंदी का ही काम किया है। चाहे जो भी हो, इस अंधेरे में उस पुजारी को पकड़ना नामुमक़िन है। सवेरा होते ही उसके वास्ते सारे जंगल और पहाड़ों को ढूँढ़ना होगा।" यह कहकर शिवाल ने लट्टूसिह को समझाया–"तुम घबराओ नहीं, नागमल्ली उस दुष्ट के हाथों से अपनी ताक़त के बल पर अकेली छूटकर आ जायगी, ऐसा मेरा विश्वास है। ऐसा न भी हुआ, तो भी पुजारी हमारे जाल में फँस कर ही रहेगा।"

शिवाल की बातें ख़तम भी न हो पायी थीं कि घाटी के बाजू में स्थित ऊँचे प्रदेश में एक जलता हुआ मशाल दिखायी पड़ा। कोई हवा में उसे हिला रहा है। शिवाल और उसके अनुचरों ने उस देखा, तब उन्हें एक सीठी की आवाज सुनायी दी। (और है)

षड़यंत्र

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट गया, पेड़ से शव उतारकर, कंधे पर डाल, सदा की भाँति मौन श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल यों कहने लगा—"राजन्, तुम जैसे व्यक्ति के प्रति हमेशा षड़यंत्र रचे जाते हैं; उसके फलस्वरूप ही तुम इस रात के वक़्त ऐसी कठिनाइयों के शिकार हो रहे हो। तुम्हारे श्रम को भुलाने के लिए मैं उज्जयिनी के राजा पर हुए षड़यंत्र की कहानी सुनाता हूँ; सुनो :–

बेताल यों कहने लगा :–

एक समय उज्जयिनी नगर में वज्रगुप्त नामक एक हीरों का व्यापारी था। वह उच्च कोटि के हीरे खरीदता और बेचता भी था। वह हीरों का पारखी था, इसलिए उसके हीरे केवल राजा और महाराजा ही खरीदते थे। बढ़िया हीरों का पता लगता

वेताल कथाएँ

तो वह समुद्रों को पार कर भी जाता और उनको ख़रीद लाता था।

एक बार उसने क्रौंचद्वीप में "शिरीषक" नामक एक अपूर्व होरा ख़रीदा। उसे पचास लाख रुपयों में बेचने का निश्चय करके वह अपने देश में लौटा।

उज्जयिनी के राजा को जब यह पता चला कि वज्रगुप्त के पास शिरीषक नामक बढ़िया हीरा है, तब उसको बुलाकर राजा ने हीरे की जाँच की और उसे खरीदने का निश्चय किया।

"वज्रगुप्त, यह हीरा पच्चीस लाख रुपयों में मुझे बेच दो।" राजा ने कहा।

वज्रगुप्त का कलेजा धड़कने लगा। उसने उस हीरे का जो मूल्य लगाया था, उसमें आधा ही राजा देने को तैयार है। राजा के द्वारा मूल्य निश्चित करने पर अधिक मूल्य माँगना उनका अनादर करना होगा। न बेचने से राजा को क्रोध आवेगा। इसलिए वज्रगुप्त कोई जवाब दे न पाया, मौन रहा।

राजा ने वज्रगुप्त को मौन देख कहा— "शायद हमारा मूल्य तुमको कम मालूम होता है?"

"ऐसी बात नहीं है, महाराज! इस हीरे पर ग्रहों का प्रभाव है। कुछ लोगों के जन्म-नक्षत्रों के लिए यह अनुकूल पड़ सकता है, कुछ लोगों के लिए हानिकारक ही नहीं, प्राण घातक भी हो सकता है।" वज्रगुप्त ने उत्तर दिया।

राजा ने समझ लिया कि वज्रगुप्त झूठ बोल रहा है। इसलिए उसने अपना जन्म-नक्षत्र बताकर पूछा—"मेरे जन्म-नक्षत्र के अनुसार इस हीरे से मेरा भविष्य क्या होगा?"

वज्रगुप्त ने झट बताया—"महाराज, इस हीरे से आपके प्राणों के लिए ख़तरा पैदा होगा, कृपया आप इसे मत ख़रीदियेगा।"

इस संदर्भ में उसने राजा से यह भी बताया कि इसी जन्म-नक्षत्रवाले एक व्यापारी ने इस हीरे को ख़रीदने से इनकार किया ।

इस पर राजा ने हँसकर उत्तर दिया– "मुझे मृत्यु का डर नहीं है । फिर भी उसके लिए तैयार होकर यह हीरा ख़रीद रहा हूँ । इसलिए तुम बेफ़िक्र होकर मुझे यह हीरा बेच सकते हो ।"

वज्रगुप्त को लाचार होकर शिरीषक हीरा राजा के हाथ बेचना पड़ा ।

यह सारा समाचार युवराज प्रसेन को मालूम हो गया । वह अक्लमंद था, लेकिन दुष्ट था । उसने वज्रगुप्त के पास पहुँचकर कहा–"वज्रगुप्त! मालूम होता है कि राजा ने तुम्हारा हीरा सस्ते में हड़प लिया है। तुमने उनको डराया कि उससे उनके प्राणों के लिए ख़तरा है, फिर भी उन्होंने इसकी परवाह नहीं की, अच्छा ही हुआ। अगर तुम मेरी एक छोटी-सी मदद करोगे तो वह हीरा तुमको यूँ ही मिल जायगा। हीरे को बेचकर तुमने जो पच्चीस लाख रुपये लिये, उनको ले लो; लौटाने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरे कहे मुताबिक़ करने को तैयार हो?"

"कहिये, आपकी आज्ञा क्या है?" वज्रगुप्त ने संदेह भरे स्वर में पूछा ।
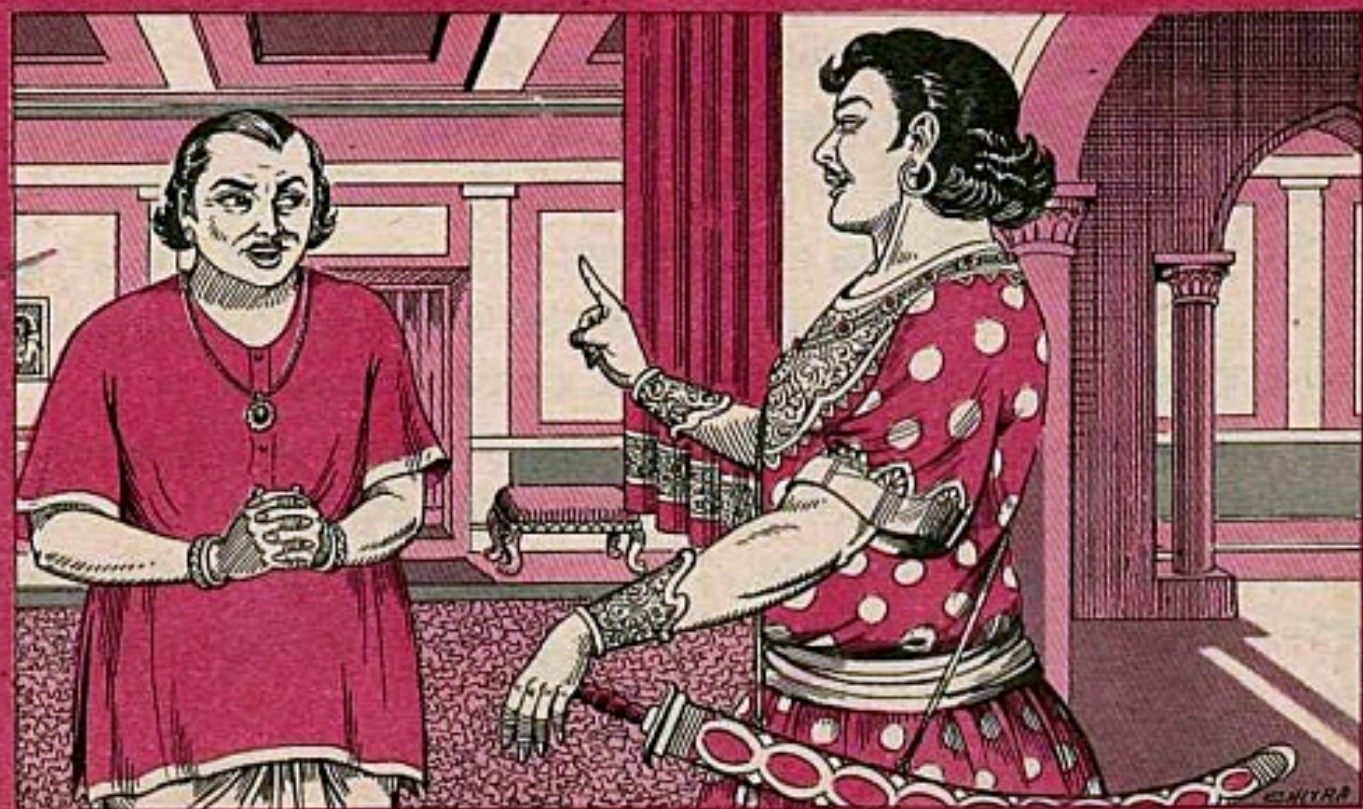
"राजा की इतनी जल्दी मृत्यु न होगी और न मेरे गद्दी पर बैठने के आसरे ही दिखायी देते हैं। किसी भी उपाय से अगर हम उनको मार सकेंगे तो कोई हम पर संदेह नहीं करेगा, बल्कि हीरे को ही इसका कारण समझेंगे। तुमने बताया भी है कि हीरे को ख़रीदने से राजा की जान के लिए खतरा है। मैंने सुना कि हीरे का चूर्ण प्राण हर लेता है। मामूली ज़हरों की तरह उसकी रुचि और गंध न होगी। तुम्हारे पास हीरे का चूर्ण हो तो दे दो, मैं उसे दूध में मिलाकर राजा को पिलाऊँगा।" युवराज ने कहा।

वज्रगुप्त थोड़ी देर तक सोचता रहा और बोला–"मेरे पास हीरे का चूर्ण है, लेकिन उसे आप खुद दूध में मिलाकर राजा से पिलवा दीजिये। यह काम किसी दूसरे को न सौंपियेगा।"

प्रसेन ने वज्रगुप्त की सलाह मान ली और हीरे का चूर्ण एक पुडिया में लेकर चला गया।

कुछ समय बाद वज्रगुप्त गुप्त रूप से महाराजा के पास पहुँचा और बोला–"महाराज, आपको बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको ज़हर पिलाने के लिए दुश्मन ताक में बैठा हुआ है। मेरी प्रार्थना है कि वैद्यों से जाँच कराये बिना आप कोई वस्तु न पीवे।" वज्रगुप्त ने राजा को सलाह दी।

यह सलाह राजा की भलाई के लिए दी गयी थी, इसलिए राजा जो भी पदार्थ खाता या पीता, उसे पहले अपने विश्वासपात्र वैद्यों से परीक्षा करवाता था। यह क्रम बराबर चलता रहा।

एक दिन राजा जब सोने जा रहा था, तब प्रसेन खुद दूध ले आया।

"बेटा, दूध तुम खुद ले आये? नौकर क्या हो गये?" यह कहते राजा दूध का

गिलास ओंठो से लगाने लगा। लेकिन उसी समय उसे वज्रगुप्त की चेतावनी याद हो आयी। राजा दूध का गिलास लेकर अपने गुप्त कक्ष में गया। वहाँ पर वैद्य ने दूध की जाँच करके बताया कि इसमें हीरे का चूर्ण मिलाया गया है।

दूसरे दिन ही राजा ने युवराज को राजद्रोही करार कर इन्साफ़ किया और युवराज को आजीवन कारावास की सज़ा सुनायी। साथ ही राजा ने वज्रगुप्त को अनेक उपहार दिये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन्, वज्रगुप्त ने प्रसेन के षड़यंत्र को क्यों बिगाड़ दिया? इससे उसकी हानि ही हुई, पर फ़ायदा न रहा। इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने कहा–"वज्रगुप्त राजद्रोही नहीं है। यह सच है कि उसने युवराज को हीरे का चूर्ण दिया है। अगर वह हीरे का चूर्ण न भी देता, तो भी वह महाराज की हत्या किये बिना न रहेगा। राजा के मरने पर सब शिरीषक की निंदा करेंगे। उसके संबंध में वह जो झूठ बोला था, वह युवराज की रक्षा करेगा। इसलिए वज्रगुप्त ने सोचा कि उसका भले ही लाभ न हो, पर राजा की रक्षा करना उसका कर्तव्य है। अतः उसने राजा को सचेत किया। इससे उसने खुद अपनी भी रक्षा कर ली। क्योंकि राज्य के वास्ते अपने पिता की हत्या करने का षड़यंत्र करनेवाला प्रसेन राजा बनने पर उसके रहस्य से परिचित वज्रगुप्त को न छोड़ेगा। चाहे किसी भी दृष्टि से देखा जाय, वज्रगुप्त का व्यवहार समुचित मालूम होता है।"

राजा के इस प्रकार मौन-भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

डींगमार

एक शहर में एक अमीर था। उसे हमेशा झूठ बोलने और डींग मारने का शौक़ था।

एक दिन उस अमीर के लिए एक गाड़ीवाले की ज़रूरत पड़ी। गाड़ी हाँकने का काम करने की इच्छा प्रकट करते एक व्यक्ति अमीर के पास आया। अमीर ने उससे पूछा— "देखो, बात का बतंगड़ बनाना जानते हो!"

"ज़रूरत पड़ने पर क्यों नहीं बना सकता, हुज़ूर!" गाड़ीवाले ने जवाब दिया।

"क्यों कि डींग मारते वक्त मैं हकला जाता हूँ, समझे!" अमीर ने कहा।

कुछ दिन बाद अमीर पड़ोसी गाँव में गया और वहाँ के पटेल से बात करते बोला— "जानते हैं, एक बार मैंने क्या किया? हवा में तीन खरगोशों को मार गिराया।"

"यह तो नामुमकिन है।" पटेल ने कहा।

"ओह, यह बात है, सरकार! कैसे हुआ, जानते हैं? एक बार हमारे मालिक शिकार खेलने गये। बाड़ी से एक खरगोश उछल पड़ा। उसके नीचे गिरने के पहले ही मेरे मालिक ने उस पर गोली चलाकर नीचे गिरा दिया। जब हमने उसका पेट चीरकर देखा तब उसमें दो और खरगोश थे।" गाड़ीवाले ने समझाया।

"ऐसा कहो, बे!" गाड़ीवाले की डींग पर यक़ीन करते हुए पटेल ने कहा।

गाड़ीवाले की डींग पर अमीर बहुत प्रसन्न हुआ। जब वह घर लौटा, तब उसने गाड़ीवाले को खूब इनाम दिया।

इल्ज़ाम

साकेतपुर में एक धनी व्यापारी था। उसके सुदर्शन और सुनीता नामक दो संतान थी। बचपन में ही उन बच्चों की माँ मर गयी। इसलिए व्यापारी ने अपने पुत्र और पुत्री को बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा और पढ़ाया। व्यापारी ने अपनी मृत्यु का समय निकट जानकर अपने पुत्र सुदर्शन को बुलाया और कहा–"बेटा, मैंने व्यापार करके लाखों रुपये कमाये। लेकिन मेरा अंतिम समय आ गया है। चाहे, हम जितने भी बड़े धनी हो, तुम घर बैठे खाते रहोगे तो वह सारा धन शीघ्र समाप्त हो जाएगा। इसलिए तुमको व्यापार का भार संभालना होगा। श्रीपुर में मेरे एक परम मित्र व्यापारी है। हम एक माँ की संतान भले ही न हों, पर सगे भाइयों की तरह परस्पर प्रेम से रहें। उसका नाम लक्ष्मीगुप्त है। वह तुमको व्यापार के रहस्य बतायेगा। तुम्हें जिस किसी भी प्रकार की तक़लीफ़ होगी तो वह दूर करेगा।"

सुदर्शन ने अपने पिता की मृत्यु होने पर अंत्येष्ठि क्रियाएँ समाप्त कीं। गरीबों को दान दिया और कुछ दिन वहीं पर बिताया। फ़िर एक दिन अपनी बहन सुनीता को निकट बुलाकर समझाया–"बहन, मैं घर बैठा रहूँ तो कोई फ़ायदा न होगा। पिता के कहे अनुसार मुझे व्यापार करना है। पहले मुझे श्रीपुर जाकर लक्ष्मीगुप्त से मिलना है। तुम चिंता न करो।"

"भैया, तुमको छोड़कर मैं अकेली कैसे रह सकती हूँ?" सुनीता ने कहा।

लेकिन सुदर्शन को अपनी बहन को घर पर छोड़कर जाना ही था। अतः उसने अपनी बहन की मदद के लिए एक बूढ़ी दासी का प्रबंध किया। उसने अपना एक

प्रवीण कुमार जैन

सुदर्शन के पिता को जानता था। इसलिए उसने उसका आदर किया।

राजा के प्रताप नामक एक ही पुत्र था। वह स्वभाव का बड़ा दयालु था। प्रताप और सुदर्शन के बीच बहुत जल्दी मैत्री स्थापित हुई। इस वजह से सुदर्शन रोज राजमहल में जाता, वहाँ भोजन करता, घंटों प्रताप से वार्तालाप करता।

कुछ दिन और बीत गये। एक दिन सुदर्शन ने लक्ष्मीगुप्त से पूछा–"चचाजी, मैं कई बार राजमहल में प्रताप का अतिथि बनकर गया। उसको भी एक बार हमारे घर बुलाकर आतिथ्य देना अच्छा होगा न?"

"ज़रूर निमंत्रण देंगे, बेटा!" लक्ष्मीगुप्त ने कहा। सुदर्शन के निमंत्रण को प्रताप ने स्वीकार किया। राजा और रानी ने भी उसे दावत में जाने की अनुमति दी।

दावत के दिन लक्ष्मीगुप्त ने अपने यहाँ बढ़िया इंतज़ाम किया। राजभवन से लेकर अपने घर तक कालीनें बिछवाई। राजोचित भोज्य पदार्थ व मनोरंजन का प्रबंध किया। प्रताप के लिए वह दिन एक पल की भांति प्रतीत हुआ। अपने मित्र सुदर्शन के अनुरोध पर प्रताप उस रात को वहीं रह गया।

चित्र बहन को देकर, उसका चित्र अपने साथ लिया। इसके बाद अपने पिता के कर्मचारियों को साथ ले श्रीपुर चला गया।

सुदर्शन के पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर लक्ष्मीगुप्त रोता रहा। उसके कोई संतान न थी। सुदर्शन जैसे सुन्दर युवक को अपने घर रहते देख लक्ष्मीगुप्त और उसकी पत्नी भी बहुत प्रसन्न हुये।

लक्ष्मीगुप्त बड़ा धनी तो था, साथ ही श्रीपुर के राजा का स्नेह पात्र भी था। इसलिए एक दिन वह राजमहल में जाते अपने साथ सुदर्शन को भी ले गया और राजा से उसका परिचय कराया। राजा

सोने के लिए जाने के पहले सुदर्शन को दीवार पर लटकनेवाली सुनीता की तस्वीर की ओर दृष्टि डालते प्रताप ने देखा। उसने भी उस चित्र को देखा। उसका मन उसी चित्र पर लगा रहा। इसलिए प्रताप उस रात को सो न पाया।

दूसरे दिन प्रताप जाने के लिए जब तैयार हुआ, तब वह बहुत ही उदास था। यह देख सुदर्शन ने पूछा—"दोस्त, आपने कल का दिन बड़ी प्रसन्नता से बिताया, पर आज क्यों उदास हैं? मुझसे कोई गलती हुई हो तो बताइये। मैं उसे सुधार लूंगा।"

"तुमने अपने रहस्य मुझसे क्यों छिपाये?" प्रताप ने पूछा।

"छिपाने के लिए मेरे पास कोई रहस्य भी तो हो।" सुदर्शन ने जवाब दिया।

"वह चित्र किसका है! मैंने कल रात को तुम्हें उस चित्र को ताकते देखा। कैसा सुंदर चेहरा है। तुमने उसके बारे में मुझसे बताया तक नहीं।" प्रताप ने पूछा।

सुदर्शन ज़ोर से हँस पड़ा और बोला—"वह मेरी बहन सुनीता है। क्या मैंने सुनीता के बारे में आप से नहीं कहा?"

प्रताप यह जानता था कि सुदर्शन के सुनीता नामक बहन है, पर उसने यह

शादी करना चाहते हो! शर्म नहीं आती?" रानी ने प्रताप से पूछा।

"मुझे उन राजकुमारियों की जरूरत नहीं, मुझे तो सुनीता ही चाहिये।" प्रताप ने स्पष्ट बता दिया। विवश होकर राजा ने लक्ष्मीगुप्त और सुदर्शन को बुला भेजा और कहा—"सुदर्शन, मेरा पुत्र प्रताप तुम्हारी बहन से विवाह करना चाहता है। तुमको कोई आपत्ति नहीं है न?"

"मुझे इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात और क्या हो सकती है, महाराज? प्रताप मेरे अभिन्न मित्र हैं। वे मेरी बहन से विवाह करने को तैयार हैं तो मैं इसे अपना भाग्य मानूँगा।" सुदर्शन ने कहा।

राजा की स्वीकृति की बात सुनते ही प्रताप मारे खुशी के उछल पड़ा।

इसके बाद राजा ने अपने मंत्री नागामात्य को बुलाकर आदेश दिया— "हमने युवराज प्रताप के विवाह का निश्चय किया है। सारे प्रबंध करा दो।"

नागामात्य को इस बीच सारी बातें मालूम हो गयीं। उसे मालूम था कि वह युवती अनुपम सुंदरी है। इसलिए उसने सोचा कि ऐसी सुंदरी के साथ राजकुमार के बदले वही विवाह करे तो क्या ही

कल्पना तक नहीं की कि वह अप्सरा जैसी है। प्रताप को लगा कि सुनीता से विवाह किये बिना वह जीवित न रह सकेगा!

घर लौटने पर प्रताप को उदास लेटे हुये देख राजा और रानी घबरा गये। उनको ऐसा लगा कि लक्ष्मीगुप्त के आतिथ्य में कोई त्रुटि हो गयी होगी।

माता-पिता ने जब जोर देकर पूछा तब प्रताप ने लाचार होकर कहा—"सुदर्शन की बहन सुनीता के साथ मेरा विवाह न होगा तो मैं घुल-घुलकर मर जाऊँगा।"

"बेटा, बड़ी सुन्दर राजकुमारियों के होते तुम एक मामूली व्यापारी की लड़की से

अच्छा होगा। यह सोचकर उसने उस विवाह को रोकने की योजना बनायी और राजा के पास जाकर नम्रतापूर्वक सलाह दी–"महाराज! आप जल्दबाज़ी न कीजियेगा। सुनते हैं कि साकेतपुर में सुनीता के कई प्रेमी हैं।"

राजा के क्रोध की सीमा न रही। उसने तुरंत लक्ष्मीगुप्त और सुदर्शन को बुलवाकर डांटा–"जब मैंने अपने पुत्र के साथ सुनीता का विवाह करने की इच्छा प्रकट की तब तुम लोगों को यह बताना चाहिए था कि उस युवती का चरित्र अच्छा नहीं है। मुझे भी धोखा देते हो?"

सुदर्शन ने सुनीता पर यह इल्ज़ाम लगाते देख आवेश में आकर कहा–"महाराज, यह साबित हो जाय कि मेरी बहन का चरित्र अच्छा नहीं है तो मुझे फाँसी पर लटकवा दीजिये। लेकिन ऐसा साबित नहीं हुआ तो जिसने यह इल्ज़ाम लगाया, उसे फाँसी की सज़ा दीजिये।"

"मैं इसकी बहन के दुश्चरित्रा होने का प्रमाण दूंगा, महाराज! मुझे एक महीने की मियाद दीजिये।" नागामात्य ने कहा।

नागामात्य उसी दिन राजा की अनुमति लेकर साकेतपुर चला गया और सुनीता के घर पहुँचकर खबर भेजी–"मैं सुनीता

को देखना चाहता हूँ। उसके भाई ने मेरे हाथ चिट्ठी भेजी है।"

"पहले चिट्ठी ला दो, बाद में सोचूंगी कि मैं उस व्यक्ति से मिल सकती हूँ या नहीं।" सुनीता ने द्वारपाल से कहा। नागामात्य ने जो जाली चिट्ठी तैयार की थी, उसको द्वारपाल के हाथ भीतर भेजा। सुनीता ने उस चिट्ठी को पढ़कर कहा—"यह मेरे भाई की लिखी चिट्ठी नहीं है। जो यह चिट्ठी लाया है, उसकी गर्दन पकड़कर भगा दो।"

नागामात्य की चाल बेकार गयी, फिर भी वह निराश नहीं हुआ। सुनीता की दासी के हाथ स्वर्णमुद्रायें देकर उसके जरिये सुनीता की सोने की अंगूठी मंगवायी और वह श्रीपुर चला गया। राजा के पूछने पर उसने जवाब दिया—"महाराज, आपकी बहू बननेवाली सुनीता ने मेरे साथ एक रात बितायी और उस प्रेम के निशान के रूप में यह अंगूठी दी है।"

राजा ने सुदर्शन को बुलवाकर उसे नागामात्य द्वारा लायी गयी अंगूठी दिखाते हुए पूछा—"क्या यह तुम्हारी बहन की अंगूठी है? एक रात उसके साथ बिताकर मेरा मंत्री यह अंगूठी ले आया है। इसका क्या जवाब देते हो?"

सुदर्शन को भी अपनी बहन के चरित्र पर संदेह करना पड़ा। उसने राजा से कहा—"महाराज, मुझे फाँसी पर चढ़वा दीजिये। पर मुझे एक सप्ताह की अवधि दीजिये।"

राजा ने सुदर्शन को फाँसी की सज़ा सुनायी। सुदर्शन ने उसी दिन अपनी बहन के नाम एक पत्र लिखा—"तुमने अपने चरित्र को बेचकर हमारे परिवार को कलंकित किया। तुमने चरित्र खो दिया और मैं जान ही खो रहा हूँ। मैं किसलिए जान से हाथ धो रहा हूँ, यह

तुमको बताने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ।"

भाई से पत्र मिलने के पहले ही सुनीता घबरा गयी। क्योंकि श्रीपुर से कोई आया और धोखे से उससे मिलना चाहा और असफल रहा। वह किसलिये आया और उसका काम कैसे बना, यह बात सुनीता को मालूम नहीं थी। इसके दो दिन बाद उसकी अंगूठी चोरी गयी। उसकी चोरी दासी को छोड़ कोई कर ही नहीं सकता था। दासी ने अपनी गलती को छिपाने के लिए क़सम भी खायी। सारा घर छान डालने पर भी अंगूठी नहीं मिली। हठात् उसके चरित्र पर संदेह करते हुए उसके भाई ने भी पत्र लिखा है। यह सब देख उसने अनुमान लगाया कि चोरी गयी अंगूठी के कारण ही उस पर ये इलजाम लगाये गये हैं। यह सब छल उसी व्यक्ति ने रचा होगा जो उसके भाई के नाम से जाली चिट्ठी ले आया था।

उस पर जो इलजाम लगाया गया था, उसकी चिंता सुनीता को न थी, पर अपने भाई की जान के ख़तरे की बात सुनकर वह व्यथित हो गयी। इसलिए तुरंत उसने अपने घर पर ताला लगाया
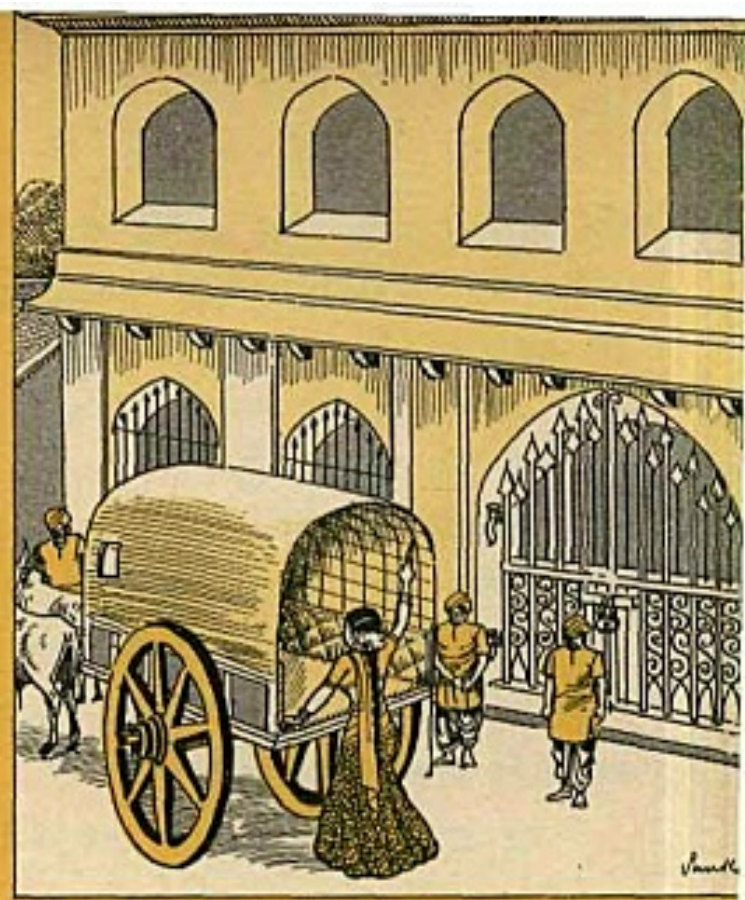
और श्रीपुर के लिए रवाना हुई। श्रीपुर में पहुँचते ही उसे सारी बातें मालूम हो गयीं। मंत्री ने उसे कुलटा साबित किया है और राजा उसी दिन अपने भाई को फाँसी के तख्ते पर लटकवा रहा है!

सुनीता सीधे वध स्थान पर पहुँची। वहाँ पर हजारों लोग जमा थे। सुदर्शन को फाँसी के तख्ते पर खड़ाकर राजा के आने का इंतजार कर रहे थे। जल्द ही राजा और मंत्री भी वहाँ आ पहुँचे। सुनीता ने सीधे राजा के पास पहुँचकर निवेदन किया—"महाराज! मेरी एक बिनती है! आप इस मंत्री की एक बात

पर विश्वास करके एक व्यक्ति की बलि देने जा रहे हैं! लेकिन मंत्री अव्वल दर्जे का दगाखोर है! इधर कुछ दिन पहले इसने साकेतपुर में आकर मेरे घर में आभूषणों की चोरी की है।"

नागामात्य साकेतपुर गया था। यह बात राजा भी जानता था। इसलिए उसने मंत्री की ओर संदेह भरी दृष्टि से देखकर पूछा—"क्यों नागामात्य, तुमने इस नारी के गहनों की चोरी की?"

"वह झूठ बोलती है, महाराज! मैंने कभी इसका चेहरा तक नहीं देखा है।" नागामात्य ने झट कह दिया।

"मेरा चेहरा तक नहीं देखा? ओह, इस नगर में सब कोई कहते हैं कि तुमने मेरे साथ एक रात बितायी और मेरे प्रेम के निशाने के रूप में तुमने मेरी अंगूठी भी प्राप्त की। यह भी झूठ है न?" सुनीता ने नागामात्य से पूछा।

राजा ने सुनीता की बातों को सुनकर चकित होकर पूछा—"बेटी, तुम कौन हो?"

"महाराज, मैं वही सुनीता हूँ जिसपर यह इलज़ाम लगाया गया है कि मैं कलंकिनी हूँ! अकारण फाँसी की सज़ा पानेवाले सुदर्शन की बहन हूँ।" यह समझाकर उसने आदि से अंत तक सारी कहानी सुनायी और अपने दुर्भाग्य पर फूट-फूटकर रोने लगी।

नागामात्य का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसके पैर काँपने लगे। राजा ने मंत्री के चेहरे को देख भांप लिया कि सुनीता निर्दोषी है। इस पर राजा ने सुदर्शन को फाँसी के तख़्ते से हटवाकर सुनीता से क्षमा माँगी और उसी तख़्ते पर नागामात्य को चढ़ाकर फाँसी की सज़ा दी।

इसके बाद सुनीता और प्रताप का विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ।

चालाकी

एक समय एक राज्य में बड़ा अकाल पड़ा। खाने के लिए लोग तरसने लगे। ऐसी हालत में राजा का एक ऊँट कहीं गुम हो गया। उसकी खोज करने राजा ने अपने भटों को चारों ओर भेज दिया।

उसी नगर में एक बावरी औरत थी जिसके तीन बेटे थे। उनमें बड़ा खेती करता था, दूसरा बगीचे लगाता था और तीसरा कपड़े बुनता था। राजा का ऊँट जब उनके घर की तरफ़ आया तब इन भाइयों ने उसे पकड़ा और काट कर उसका मांस बर्तनों में छिपाया। यह काम इतनी चालाकी से किया कि यह खबर किसी को न लगी।

यह सब काम उसकी माँ देख रही थी। वह बावरी थी, उसके मुँह में कोई बात पचती न थी। इसलिए बेटों ने कहा–"माँ, आज हम तुमको दुलहिन बनाने जा रहे हैं। तुम्हारी शादी के समय इस ऊँट के मांस से बढ़िया दावत देंगे।"

राजा के भट ऊँट की खोज करते खेत जोतनेवाले के पास पहुँचे और पूछा–"देखो भाई, इधर कहीं ऊँट तो नहीं आया?"

"अरे देखते नहीं हो, मैं खेत जोत रहा हूँ।" उस आदमी ने राजभटों से कहा।

"यह सही है, लेकिन बात यह है कि राजा का ऊँट खो गया है। क्या तुमने कहीं देखा?" भटों ने पूछा।

"मैं कह नहीं सकता। एक दिन दो एकड़ जोत नहीं पाता।" उसने फिर जवाब दिया। दो-तीन सवाल पूछकर राजभटों ने कहा–"यह तो बावरा मालूम होता है।" और वहाँ से चल दिये।

राजभट आगे बढ़े और बगीचेवाले के पास पहुँचे। वह आम तोड़ रहा था।

कुमारी दीप्ति अग्रवाल

"क्या तुमने राजा के ऊँट को देखा है?" भटों ने पूछा।

"अरे देखते हो न, आम तोड़ रहा हूँ।" माली ने जवाब दिया।

"आम तो तोड़ रहे हो, सही है। लेकिन हम पूछते हैं कि क्या तुमने राजा के ऊँट को देखा?" "पेड़ों में कुम्हड़े जैसे आम लगते हैं।" माली ने कहा।

भटों ने सोचा कि यह भी पागल है और बुनकर के पास पहुँच कर पूछा– "सुनो, भाई! क्या तुमने राजा के ऊँट को देखा?" उसने भी पागल जैसा अभिनय किया–"किसी दिन बहुत अच्छा बुन लेता हूँ तो कभी पल पल पर धागा टूट जाता है। क्या बताऊँ?"

"यह तो बताओ, राजा के ऊँट को तुमने कहीं देखा भी है?" भठों ने फिर जोर देकर पूछा। "शादी का समय हो तो चार पैसे मिल जाते हैं, नहीं तो व्यापारी ठीक दाम नहीं देता।" बुनकर ने उत्तर दिया।

उससे ऊबकर भट उसकी माँ के पास पहुँचे। वह बावरी अपने घर के द्वार पर खड़ी ताक रही थी।

"क्यों माईजी, क्या तुमने राजा का ऊँट देखा?" भटों ने उस बावरी से यही सवाल किया।

"क्यों नहीं देखा, बेटे? मेरे बेटों ने उसे मार डाला है।" बावरी ने झट जवाब दिया।

"कब मार डाला, माईजी?" भटों ने आतुरता से पूछा।

"जिस दिन मुझे दुलहिन बनाया, उसी दिन मार डाला, बेटो!" बावरी ने भटों के सवाल का जवाब दिया।

भटों ने सोचा कि उस बावरी से सवाल पूछना बेकार है और निराश होकर वहाँ से चल दिये।

भूतों की ज़मीन

पुराने जमाने में कोसल राज्य की सीमा पर रंगपुरी नामक छोटा-सा गाँव था। उस गाँव के लोग गरीब थे। इसकी वजह यह थी कि उस गाँव के तीन ओर बंजर भूमि थी और गाँव की उत्तरी सीमा पर बड़ी अच्छी उपजाऊ ज़मीन थी। बहुत समय तक गाँववालों ने उपजाऊ ज़मीन में अच्छी फसलें पैदा कीं, लेकिन इधन दस-बारह सालों से वह भी बंजर बन गयी थी। गाँववालों का विश्वास था कि उस ज़मीन में भूतों ने अपना अड्डा जमा लिया है। उस ज़मीन में जिन किसानों ने खेती करने की कोशिश की, वे सब भूतों के द्वारा या तो मारे गये या पागल हो गये। इस से डरकर गाँववालों ने उत्तर की ज़मीन में खेती करना छोड़ दिया। इस से वहाँ पर झाड-झंखाड उग गये। परिणाम स्वरूप रंगपुरी और भी गरीब हो गया।

उस गाँव में सुबुद्धि नामक एक युवक था। उसने बचपन में ही काशी जाकर कई शास्त्रों का अध्ययन किया और ज्ञानी हो कर अपना गाँव लौटा। सुबुद्धि ने देखा कि उसके गाँव की हालत बड़ी खराब है। उसने सारे गाँववालों को बुलाकर पूछा—"आप लोगों ने उत्तर की ज़मीन को खेती करने से क्यों छोड़ दिया? अनाज के बिना कैसे ज़िंदगी काटते हैं?"

"हम ज़िंदगी नहीं काटते, बल्कि धीरे-धीरे मरते जा रहें हैं। जो लोग इस गाँव की हालत से तंग आये, वे कभी के छोड़कर चले गये। उत्तर की ज़मीन अब उपजाऊ नहीं रही, वह भूतों की ज़मीन बन गयी है। कभी कभी रातों में वहाँ पर मशालवाले भूतों का संचार होता है। हर रात को भूत पालकी ढोते दिखायी देते हैं। बरगद के पेड़ में भूतों ने अपना

श्यामा दत्ता

अड्डा बना लिया है। यह कोई अफवाह नहीं; गाँव के प्रत्येक आदमी ने ये घटनाएँ अपनी आँखों से देखी हैं और अपने कानों से सुनी है।" गाँववालों ने कहा।

गाँववालों के अज्ञान और भोलेपन को देख सुबुद्धि चकित रह गया। उसने गाँव के कई लोगों से पूछा, सबने यही जवाब दिया कि मशालवाले भूत रातों में घूमते हैं, पालकियाँ ढोते हैं और ठठाकर हँसते हैं। दो-तीन किसान सचमुच खेतों में बुरी मौत मरे थे। इस वजह से अंधेरे के होते ही गाँववाले घर से बाहर निकलते न थे। एक दिन रात को सुबुद्धि घर से निकला। गलियाँ निर्जन थीं। वह अकेले उत्तर की ओर पैदल चला गया। गाँव के बाहर आते ही उसे भूतों की ज़मीन में एक बड़ा बरगद का पेड़ दिखायी दिया। उसके सिरे पर कोई सफ़ेद चीज़ हिलती-सी नज़र आयी। उसके बाज़ू में एक ज्वाला उठी और तुरंत बुझ गयी। कोई विकृत रूप से हँस पड़ा। फिर सन्नाटा छा गया।

सुबुद्धि ने क्रोध में आकर दाँत पीसा और उसी क्षण उसने निश्चय किया कि क्या करना चाहिये। फिर घर लौटकर सो गया। दूसरे दिन दुपहर को भोजन करने के बाद सुबद्धि ने अपने लिए आवश्यक चीज़ों की गठरी बाँध ली। इसके बाद सब गाँववालों से कह आया कि वह कहीं दूसरी जगह चला जा रहा है। गाँववालों ने उसे सलाह दी—"तुमको कहीं जाना है तो दिन के समय ही चले जाओ।"

सूरज के डूबने के घंटा-भर पहले ही सुबुद्धि भूतों की ज़मीन की ओर रवाना हुआ। लेकिन वह उस ज़मीन को पारकर नहीं गया। अपनी गठरी को एक झाड़ी में छिपाकर उसने बरगद के चारों तरफ़ गहरी जाँच की। उसका संदेह और दृढ़ हो गया। उसे लगा कि उस प्रदेश में

मनुष्यों का संचार हुआ है। उनके पैरों के चिह्न थे। लेकिन वे चिह्न उसके गाँववालों के नहीं थे।

सूर्यास्त के समय सुबुद्धि ने अपनी गठरी खोल दी। उसमें से काले कपड़े निकाल कर पहन लिया। गठरी लेकर बरगद पर चढ़ गया। एक ऊँची डाल पर बैठकर उसने चारों तरफ़ रस्सियाँ इस तरह बाँध दीं ताकि वह सोते समय नीचे गिर न पड़े। अंधेरा फैल जाने पर उसने गठरी खोलकर खाना खाया और पानी पिया। अब वह इतमीनाम से भूतों का इंतज़ार करने लगा।

आधी रात के क़रीब कुछ आदमी उस भूतों की ज़मीन में आये। ऐसा मालूम होता था कि वे लोग उस प्रदेश से ख़ूब परिचित हैं। वे कुल चार-पांच आदमी थे। एक जगह उन लोगों ने अलाव जलाया। उस आग में धूप डाल दी। वह झट भभक उठी और बुझ गयी। इसके बाद उन लोगों ने खाना बनाना शुरू किया। एक आदमी ने एक लंबा डंडा निकाला, उस पर एक सफ़ेद वस्त्र बाँधकर, बरगद के बाजू में ख़ूब हिला कर नीचे रख दिया। बीच बीच में एक आदमी सियारों की तरह चिल्ला रहा था। दूसरा अट्टहास करता रहा।
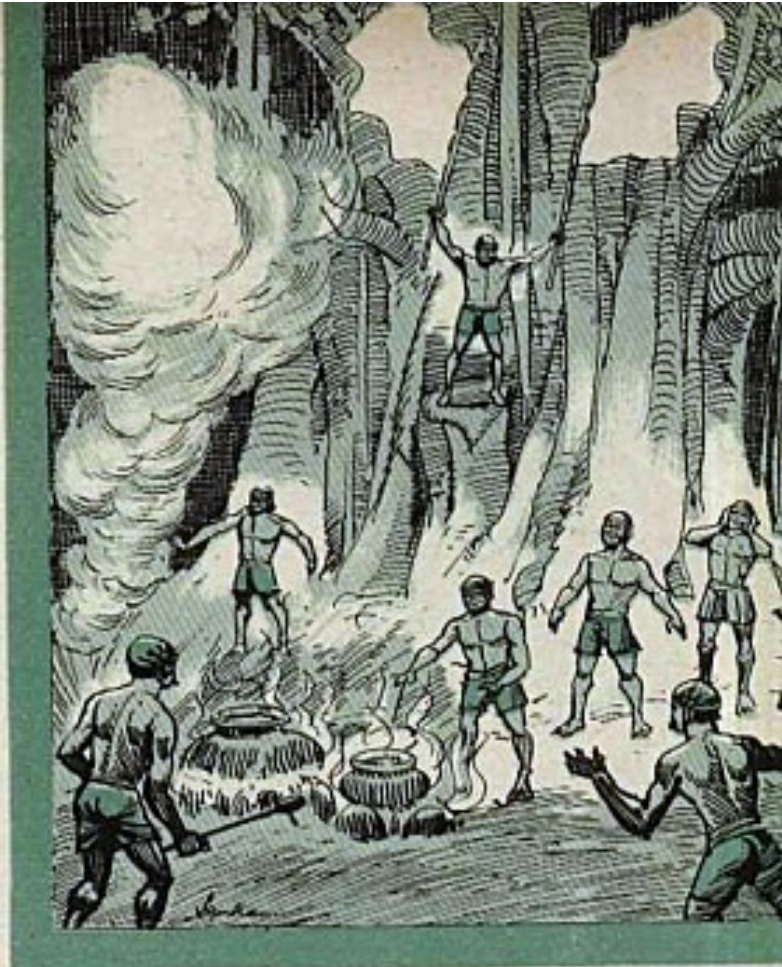
इस तरह वे लोग एक-दो घंटे भूतों के खेल खेलते रहें। तब दस आदमी और वहाँ पर आ पहुँचे। सुबुद्धि ने देखा कि उनके साथ कई गठरियाँ थीं। वे एक जलती लकड़ी लेकर सीधे बरगद के नीचे आये। वहाँ पर एक बड़ी चट्टान को हटाकर गड्डा खोदा। थोड़ी मिट्टी के निकालने पर सुबुद्धि को और गठरियाँ दिखायी दीं। चोरों ने अपनी सारी गठरियों को उस गड्डे में छिपा दिया, उस पर मिट्टी डाली। फिर चट्टान को पहले की
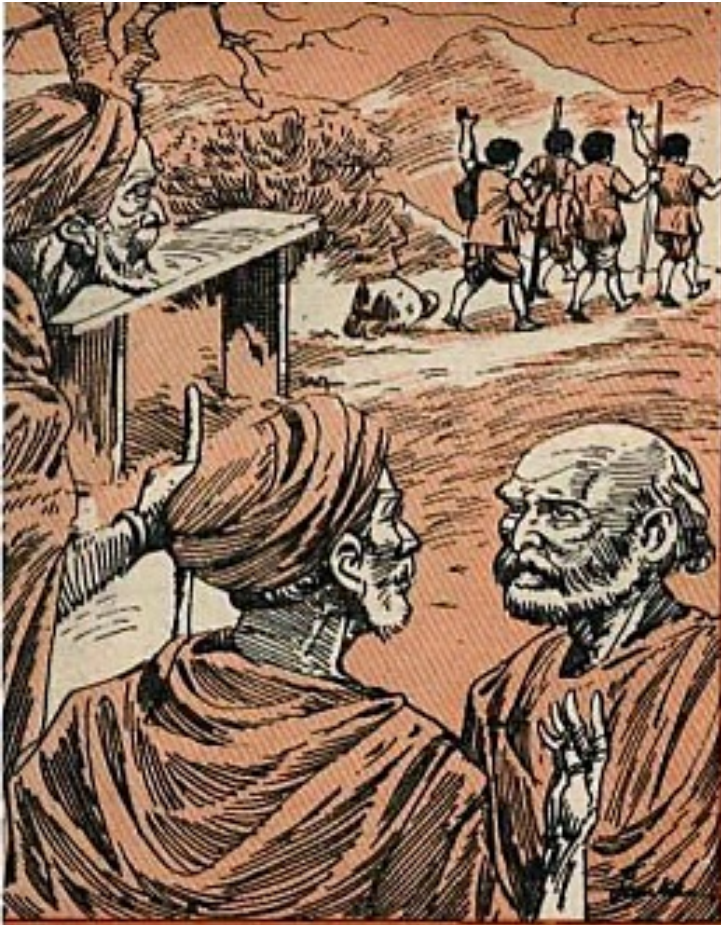
"मैं कहाँ गया? रात-भर भूतों की जमीन में रहा। भूतों के साथ अपना समय काटा।" सुबुद्धि ने उत्तर दिया।

"भूतों ने तुम को जान से छोड़ दिया?" गाँववालों ने फिर पूछा।

"वे भी हम जैसे भूत हैं। हम लोग हिम्मत से काम लेंगे तो हमारे द्वारा उनको ही खतरा पैदा होगा। आप लोगों को एक मज़ेदार चीज दिखाता हूँ। मेरे साथ चलिये।" सुबुद्धि ने समझाया।

बहुत लोग यह सोचकर डर गये कि सुबुद्धि उनको भूतों की ज़मीन में बुला रहा है। पाँछ-छे हिम्मतवर युवकों को साथ लेकर सुबुद्धि कड़ी दुपहरी में भूतों की जमीन छान डालता रहा।

"देखो, यहीं पर भूत खाना पकाते हैं। ये देखो, जली लकड़ी के टुकड़े और राख। यह है, धूप का चूर्ण! आग में धूप डालने से भभक उठता है। वही मशालवाला भूत है! समझे? कहीं भूत भी खाना पकाकर खाते हैं? तुम लोग जिन को भूत समझते हो, वे चोर हैं! सब मिलकर पंद्रह तक हैं। बरगद पर भूतों का खेल क्या है, जानते हो? लंबे डंडे पर सफ़ेद कपड़ा बांध हिला देते हैं। मैंने इस बरगद पर बैठकर रात में

तरह सरका दिया। इसके बाद सबने बैठकर खाना खाया। फिर थोड़ी देर तक भूतों के खेल खेलते रहें, तब सब लोग सीमा की ओर चले गये।

चोरों के जाते ही सुबुद्धि आराम से सो गया। जब उसकी आँखें खुलीं तब उसने देखा कि सूरज आसमान पर चढ़ता जा रहा है। उसने रस्सियाँ खोल दीं, और पेड़ से उतरकर गाँव में लौट आया।

अरे भाई, तुमने कहा था कि गाँव छोड़कर चला जाऊँगा। फिर इतनी जल्दी कैसे लौट आये? कहाँ गये थे?" गाँववालों ने सुबुद्धि से पूछा।

उनके सारे खेल देखे हैं। मेरा अनुमान है कि वे लोग सीमा के उस पार जंगलों में रहते हैं। रातों में चोरी करके जो कुछ धन व गहने लाते हैं, उन को इस बरगद के पास, चट्टान के नीचे गाड़ देते हैं। उठाओ इस चट्टान को!" सुबुद्धि ने कहा।

सबके उठाने पर चट्टान सरक गयी। उसके नीचे खोदने पर छोटी-बड़ी सौ तक गठरियाँ मिलीं। सुबुद्धि उन गठरियों को अपने साथियों के साथ उठवाकर गाँव में ले गया। सुबुद्धि ने फिर गाँववालों को इकट्ठा किया। पहले से सारी बातें उनको समझा दीं। उसकी बातों पर गाँववालों का विश्वास जम गया।

"बारह सालों से हमारे गाँव को तबाह करनेवाले इन चोरों को हमें कठिन दण्ड देना होगा। इन सबको पकड़कर हम राजा के हाथ सौंप देंगे। ये जो धन हमें मिला है, उसे भी राजा के हाथ सौंपकर वे हमें जो इनाम देंगे, वही हम लेंगे! इसके बाद हम सब मिलकर सामूहिक रूप में उत्तर की जमीन में खेती करेंगे।" सुबुद्धि ने सबको समझाया।

उस दिन रात को चोर बरगद के पास आये। चट्टान उठाकर मिट्टी खोदकर गठरियों को न देख हैरान हो गये। तभी गाँव के पचास आदमियों ने लाठियाँ लेकर उन पर हमला बोल दिया। उनको क़ैदकर राजा के पास ले गये।

राजा चोरों को देख बहुत खुश हुये। बारह साल से उसके राज्य में चोरियाँ हो रही थीं। चोरों और चोरी के माल को सुबुद्धि ने अपनी होशियारी से पकड़ लिया। इसलिए राजा ने सुबुद्धि के गाँववालों को पाँच गाड़ियाँ भरकर अनाज भेज दिया। उसी साल रंगपुरी के किसानों ने उत्तर की ज़मीन को जोतकर फ़सल पैदा की। इसके बाद रंगपुरी की दरिद्रता जाती रही!
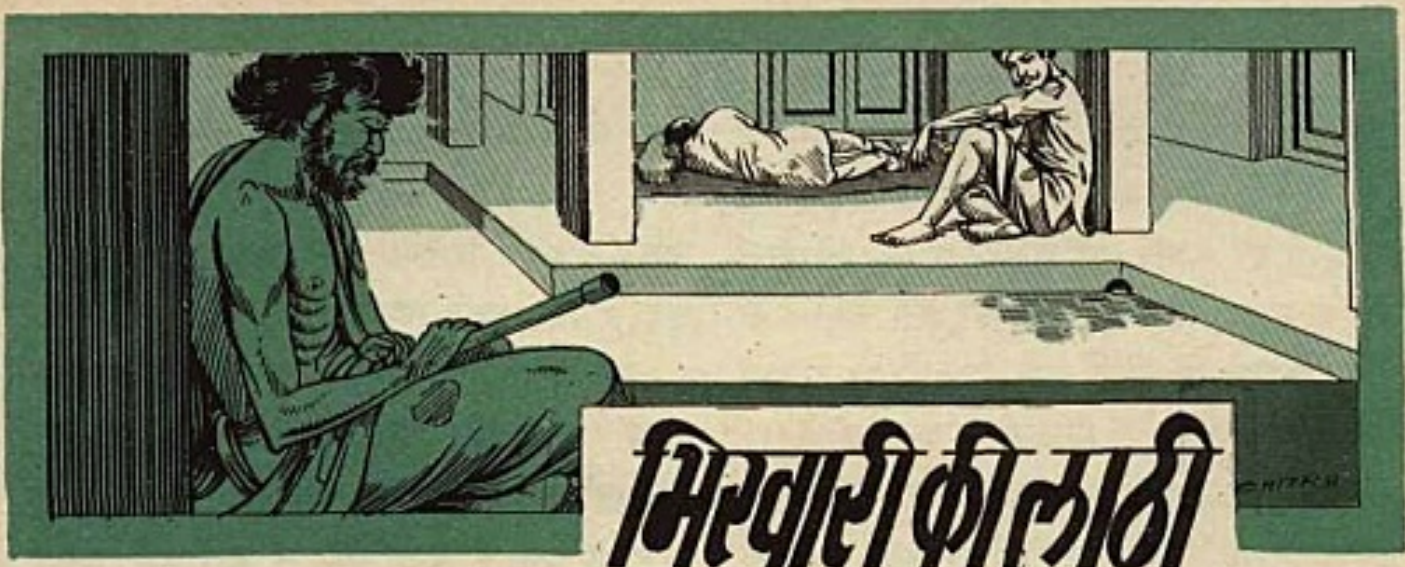
भिखारी की लाठी

एक गाँव में एक भिखारी था। उसके हाथ में एक लाठी थी। उसके दोनों सिरे पीतल से मढ़े थे। वह दिन-रात उस लाठी को अपने पास रखता था।

उस गाँव के रामलाल ने इस बात का पता लगाया कि भिखारी पल-भर भी अपनी लाठी को अपने से अलग होने नहीं देता। भिखारी ऐसा बूढ़ा तो नहीं कि लाठी के सहारे के बिना चल न सके। वह अंधा भी नहीं, फिर क्यों हमेशा अपने साथ लाठी रखता है। शायद उस लाठी में भिखारी की संपत्ति होगी। रामलाल ने यह सोचकर उस लाठी को हड़पना चाहा। एक दिन रात को रामलाल भी वहीं सोया जहाँ भिखारी सोया करता था। भिखारी ने जब करवट बदली तब रामलाल ने चुपके से लाठी निकाली और चंपत हो गया।

रास्ते में रामलाल की मुलाक़ात एक बनिये से हुयी। वह माल खरीदने हाट में जा रहा था। बनिये की कमर में रुपयों की गठरी देख रामलाल के मन में उसे हड़पने की इच्छा पैदा हुई।

रामलाल बनिये के रास्ते को रोककर खड़ा हो गया और गरजकर बोला—"तुम अपना सारा धन रख दो!"

बनिये ने देने से इनकार किया।

"धन देते हो कि नहीं?" रामलाल ने डांट बतायी और ज़ोर से उसके सर पर लाठी दे मारी। बनिया चोट खाकर बेहोश हो नीचे लुढक पड़ा।

बनिये की गठरी लेने के बाद रामलाल के मन में यह डर पैदा हो गया कि वह मर गया है। कोई उसके हाथ में लाठी देखे तो उस पर संदेह करेगा, यह सोचकर वह लाठी वहीं छोड़ भाग गया।

राजेन्द्रकुमार जैन

थोड़ी देर बाद बनिया होश में आया। कमर में देखा, रुपये नहीं थे। लेकिन पास में लाठी पड़ी हुई थी। बनिये ने उस लाठी की जाँच की। लाठी भारी थी। उसके दोनों सिरों पर पीतल के टोप थे। उसने सोचा कि उस लाठी की महानता बताकर बीस रुपये बनाया है। इससे उस के जो दस रुपये चोरी गये, उसके साथ दस और रुपयों का नफ़ा होगा!

बनिये ने पड़ोसी गाँव के सुनार के पास जाकर कहा—"इस लाठी में क़ीमती हीरे हैं। कहा गया है कि मेरी जन्मपत्री के मुताबिक़ मैं इन हीरों का उपयोग नहीं कर सकता हूँ। मैं इसे सस्ते में तुम्हारे हाथ बेच देता हूँ। तुम इस लाठी को लेकर उसके पीतल के खोल निकाल दो और उन हीरों को तुम्हीं रख लो।"

बनिये की बातों में आकर सुनार ने बीस रुपयों में लाठी ख़रीद ली।

सुनार की दूकान में बनिये और सुनार के बीच जो बातचीत हो रही थी, उसे गली में रहकर दो चोरों ने सुन ली। उस रात को चोरों ने लाठी की चोरी की। लाठी को लेकर चोर गाँव के बाहर पहुँचे। उन दोनों ने निश्चय कर लिया कि लाठी के पीतल के खोल निकालकर
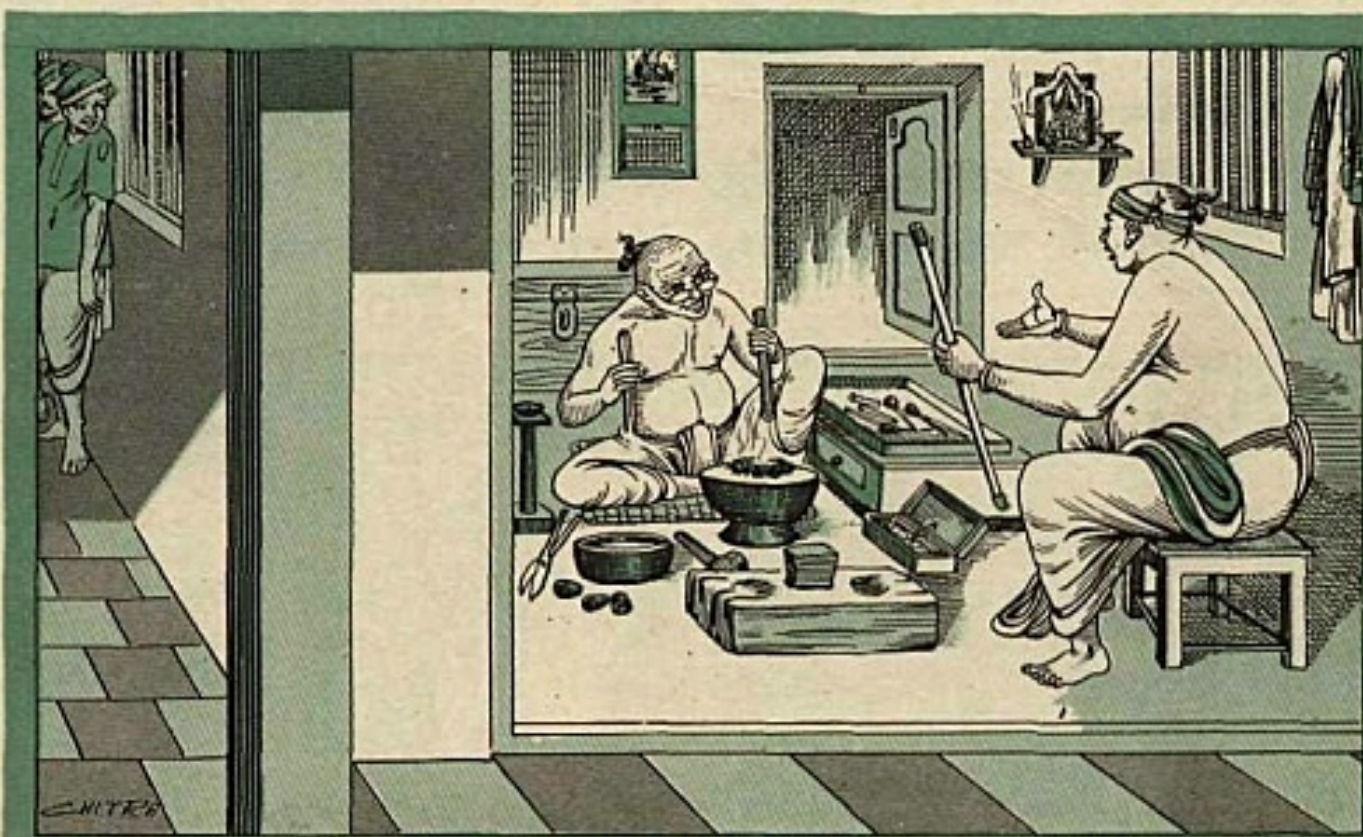
आपस में हीरे बांट लेंगे। लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी पीतल के टोप निकलते न थे। इस बीच उसके बंटवारे को लेकर दोनों में मतभेद हो गया। दोनों झगड़ने लगे।

इस बीच राजभटों ने आकर उन दोनों को पकड़ लिया और उनको राजा के पास ले गये। राजा को मालूम हुआ कि वे दोनों लाठी में छिपाये गये धन के वास्ते झगड़ा कर रहे हैं और उस लाठी की दोनों ने कहीं से चोरी की है। इसलिए राजा ने दोनों चोरों को क़ैदखाने में बंद किया। इसके बाद राजा ने सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो आदमी उस लाठी के भीतर की चीज़ों का पता बतायेगा, उसको बढ़िया इनाम दिया जायगा।

ढिंढोरा सुनकर रामलाल, बनिया, सुनार और भिखारी चारों आदमी राजा के पास पहुँचे। रामलाल ने कहा—"महाराज, उस लाठी में सोना है।"

"नहीं महाराज, हीरे हैं!" बनिये ने कहा। "जी हाँ, सचमुच हीरे हैं।" सुनार ने समर्थन किया।

"हुज़ूर! यह लाठी मेरी है। मुझे दिलाइये।" भिखारी ने राजा से प्रार्थना की।

"इसमें क्या है, बताओ सही?" राजा ने भिखारी से पूछा।

"सरकार, भिखारी की लाठी में होगा क्या? कुछ नहीं। किसी पुण्यात्मा ने लाठी के दोनों सिरों पर पीतल के टोप लगवा कर दिये हैं।" भिखारी ने कहा।

भिखारी की बातों से राजा प्रसन्न हुआ। रामलाल, बनिया और सुनार यह नहीं बता सके कि लाठी में क्या है, इसलिए हर एक से राजा ने भिखारी को सौ-सौ रुपये दिलाये और वह लाठी भिखारी को दिलाकर भेज दिया।

राज-दण्ड

विक्रमासिद्धि जब कलिंग राज्य की गद्दी पर बैठा, तब उसने सर्व प्रथम अपने राज्य के चारों तरफ़ के दुश्मन राजाओं को जीत लिया और अपने राज्य को मजबूत बनाया। लेकिन भुवनगिरि के जयदेव राजा ने कलिंग राज्य का सामंत होते हुए भी, विद्रोह किया। उसे पराजित करने के लिए अपने सेनापतियों में से सबसे छोटे, विश्वासपात्र और बुद्धिमान शक्तिसिंह को आदेश दिया। शक्तिसिंह जब राज्य से निकलने लगा, तब राजा ने उसके हाथ अपना राजदण्ड देकर कहा–"यह दण्ड मेरा प्रतिनिधि है। यह जब तक तुम्हारे हाथ में होगा, तब तक तुम्हारे निर्णय मेरे निर्णय हैं। विजयी होकर लौटो।"

शक्तिसिंह एक भारी फौज लेकर भुवनगिरि के राज्य में पहुँचा और क़िले के एक मील की दूरी पर अपना डेरा डाला। उसने कभी उस क़िले को नहीं देखा था। उस पर हमला करना मामूली बात न थी। उस दुर्ग पर घेरा डाले तो दो साल तक भी दुश्मन उसका सामना कर सकता है।

शक्तिसिंह ने सोचा कि लड़ाई की तैयारियाँ बेकार हैं। इसलिए उसने जयदेव के पास संधि का प्रस्ताव भेजा। संधि की शर्तों पर विचार करने के लिए उसने अपने शिविर तथा दुर्ग के बीच में एक डेरा लगवाया। उस डेरे के अन्दर दो सौ पेटियों का इंतज़ाम किया। वह खुद थोड़े अंगरक्षकों के साथ उस डेरे में पहुँचा और जयदेव का इंतज़ार करने लगा। जयदेव भी चन्द अंगरक्षकों के साथ डेरे में आया।

"मैं बिना हथियार के आया हूँ, तुम भी निरायुध हो। हम संधि संबंधी जिन शर्तों पर विचार करेंगे, उनको किसी और को सुनना ठीक नहीं होगा। इसलिए हम अपने अपने

श्रीमती विनीता

अंगरक्षकों को दूर भेजकर स्वेच्छा से बात करेंगे।" शक्तिसिंह ने जयदेव को सलाह दी।

अब केवल वे दोनों डेरे में बच रहें। तब शक्तिसिंह ने जयदेव से कहा–"भाई, राजा ने मेरे कंधों पर बड़ी जिम्मेवारी का काम सौंपा है। बड़ी सेना के होते हुए भी मैं तुम्हारे दुर्ग पर विजय नहीं पा सकता। मेरे हार कर लौटने की अपेक्षा युद्ध में मर जाना बेहतर है। मेरे राजा बहुत ही क्रूर व्यक्ति हैं। ऐसे दुष्ट के प्रति विद्रोह करनेवाले तुमको देख मुझे ईर्ष्या होती है। मैं भी तुम्हारे साथ विद्रोह में शामिल होना चाहता हूँ।"

"इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है। तुम नामी योद्धा हो। दोनों मिलकर थोड़ा थोड़ा करके कलिंग राज्य को हड़प सकते हैं। मेरे साम्राज्य में तुम मेरे बाद मेरे बराबर के पद पर रह सकते हो। लेकिन इस बात की क्या ग्यारंटी है कि तुम मुझे धोखा न दोगे?" जयदेव ने अपनी शंका प्रकट की।

"मैं क़सम नहीं खाऊँगा। क्योंकि क़सम खाने की कोई क़ीमत नहीं होती। मगर मैं तुमको उससे भी क़ीमती चीज़ सौंप सकता हूँ।" शक्तिसिंह ने कहा। "अगर तुम मेरे आधीन में रहने को

तैयार हो तो मैं तुम्हारी बातों पर यक़ीन कर सकता हूँ ।" जयदेव ने कहा ।

"मुझे इस बात का क्या भरोसा है कि मेरी फौज मुझे छोड़कर दूसरे सेनापति के आश्रय में युद्ध न करेगी? इसमें खतरा भी है । लेकिन मैं इससे भी बढ़िया उपाय तुमको बताता हूँ ।" यह कहते शक्तिसिंह ने अपने एक अनुचर को पुकारा । एक पेटी की ओर इशारा करके उसका ताला तोड़ने का उसे आदेश दिया ।

उस पेटी में पूरा सोना भरा हुआ था ।

"लड़ाई के खर्च के लिए राजा ने मुझे इस तरह की दो सौ पेटियाँ दी हैं । ये ही वे पेटियाँ हैं । ताला तोड़ी गयी पेटी को मैं रख लूँगा और बाक़ी सभी पेटियाँ मैं तुमको दूँगा । हम जिस साम्राज्य की स्थापना करने जा रहे हैं, उस साम्राज्य के मित्रों को पुरस्कार देने और दुश्मन को घूस देने तथा अन्य खर्चों के लिए भी हम इस सोने का उपयोग कर सकते हैं । यह सारा सोना तुमको देने से तुम्हारा यह लाभ होगा कि धन के बिना मेरी सेना एक दिन भी ज़िंदा नहीं रह सकती । वह आसानी से तुम्हारे आधीन हो जायगी । इन पेटियों को ढोने के लिए मैं चार सौ बेहथियार सैनिकों को भेजता हूँ । इसके बाद तुम

मुझे जब बुलाओगे, तब मैं अपनी सेना के साथ तुमसे आ मिलूँगा।" शक्तिसिंह ने अपनी योजना समझायी।

जयदेव बहुत संतुष्ट हुआ। प्रत्येक पेटी के साथ दो कलिंग सैनिक उसे ढोते हुए क़िले की ओर निकले। जयदेव ने अपने अनुचरों में से एक को आदेश दिया— "क़िले के पहरेदारों से कहो कि इनको अन्दर जाने दे।"

सैनिकों के जाते ही दोनों परस्पर वार्तालाप करते थोड़ी देर बैठे रहें। उस वक़्त जयदेव ने कहा—"मैंने सुना कि तुम अपने साथ राजदण्ड ले आये हो। आइंदा उस दण्ड का मेरे पास रहना उचित होगा।"

शक्तिसिंह उठकर चला गया और राजदण्ड को लाते हुए बोला—"यह अपूर्व राजदण्ड है। यह जिसके हाथ होगा, वह अजेय होगा। यह राजद्रोहियों के प्रति वज्रायुध है। ये बातें कहते शक्तिसिंह ने हठात उस दण्ड से जयदेव के सर पर ज़ोर से दे मारा। जयदेव का सर फूटने से वह वहीं गिरकर मर गया।

इस बीच में सभी पेटियाँ भुवनगिरि के क़िले में पहुँच गयीं। प्रत्येक पेटी में से एक सैनिक बाहर आया और उसे उठा लानेवाले दो योद्धाओं को हथियार दिया। छे सौ सैनिकों ने क़िले के दर्वाज़े पर बड़ी आसानी से क़ब्ज़ा कर लिया।

इस तरह शक्तिसिंह को कलिंग सेना पर अधिकार करने में ज़्यादा समय न लगा।

विक्रमसिद्धि ने सपने में भी नहीं सोचा था कि शक्तिसिंह इतनी जल्दी व आसानी से भुवनगिरि दुर्ग पर अधिकार कर लेगा। राजा ने जयदेव के स्थान पर शक्तिसिंह को अपना सामंत घोषित किया और उसे बहुत पुरस्कार और उपाधियाँ देकर उसका आदर किया।

मिट्टी के पैर

बच्चे खेल-कूदकर घर लौटे। दादा ने कहा—"बच्चो, पैर धोकर आ जाओ।"

सब बच्चे हाथ-पैर धोने चले गये। लेकिन सबसे छोटा नहीं गया। "मुन्ना, देखो, तुम्हारे पैरों में मिट्टी जमी हुई है। जाओ, पैर धो आओ।" दादा ने समझाया।

"वह कभी हाथ-पैर नहीं धोता, दादाजी! पैरों की मिट्टी बिस्तरों पर डाल देता है।" बच्चों ने कहा।

"पैर धोने से फिर मिट्टी लग जाती है, दादाजी।" छोटे ने उल्टा सवाल किया।

"बहुत दिन पहले तुम जैसा एक राजा था।" दादा ने कहा। बच्चे कहानी सुनने के लिए दादा को घेरकर बैठ गये। एक ने पूछा—"वह राजा कौन है, दादाजी? उस राजा ने क्या किया?"

"सुनो, बताता हूँ।" दादा ने सुँघनी ली और कहानी सुनाना शुरू किया।

चाहे वह राजा कोई क्यों न हो? वह मिट्टी को देख खीझ उठता था। पैरों में थोड़ी धूल लग जाती तो तुरंत जाकर पैर धो लेता था। लेकिन फ़ायदा ही क्या था? फिर पैरों में धूल लग जाती थी।

बार-बार धूल के लगते देख राजा खीझ उठा और अपने मंत्री को बुलाकर आदेश दिया—"तुमको एक महीने का समय देता हूँ। इस मियाद के अन्दर सारे राज्य में ऐसी सफ़ाई करा दो जिससे कहीं धूल न रहे। ऐसा न कराओगे तो तुम्हारा सर कटवा दूँगा।" राजा की बातें सुनकर मंत्री का कलेजा धड़कने लगा। उसने दरबार के पंडितों और बुद्धिमानों को बुलाकर चर्चा की। सबने यह निर्णय किया कि एक लाख झाड़ू देकर सफ़ाई करायी जाय।

एक लाख लोगों के झाड़ू देने से ऐसी धूल उठी जो सारी हवा में फैल गयी।

राजीव गुप्ता

सबका दम घुटने लगा। राजा छींकने लगा। उसने पता लगवाया कि आखिर हवा में इतनी धूल कहाँ से आ गयी, तब मालूम हुआ कि यह मंत्री की करतूत है।

राजा ने फिर मंत्री को बुला भेजा और कठोर स्वर में आदेश दिया–"मैंने धूल साफ़ कराने को कहा तो तुम हवा को धूल से भरवा देते हो? अभी तुम धूल न बैठा दोगे तो तुम्हारा सर कटवा दूंगा।"

मंत्री घबरा गया। बुद्धिमानों ने उसे सलाह दी–"हवा का दुश्मन धूल है। सारे राज्य में पानी छिड़कवाकर धूल बैठा देंगे।" फिर क्या था? दस लाख लोगों को दस लाख बाल्टियाँ देकर सारे राज्य को धोने का आदेश दिया गया। कुओं से पानी खींच खींचकर सारी जमीन भिगोने लगे। जल्द ही कुओं का पानी खतम हो गया। जिस पानी से जमीन साफ़ किया गया, वह सारा पानी तालाबों और नदी-नालों में बह गया। कुएँ सूख गये।

इस बार भी ग़ुस्से में आकर राजा ने उसे डांट बतायी–"तुम जैसे बेवकूफ़ का मेरा मंत्री होना मेरी ही बद-क़िस्मती है। धूल की समस्या को दूर न कर सका, उल्टे रोज कई समस्याएँ खड़ा कर देते हो। कल इस समय तक तुम समस्या को हल न

करोगे तो तुम अपनी गर्दन पर सर न पाओगे, समझें!"

मंत्री के चेहरे पर अब काटो तो खून नहीं। वह डर के मारे काँप उठा। फिर मेधावियों को बुलाकर सभा की। उनमें से एक ने अच्छी सलाह दी–"हमारे राज्य में जहाँ जहाँ मनुष्य चलते हैं वहाँ वहाँ चमड़े बिछाये जायें तो पैरों में मिट्टी नहीं लगेगी।"

"वाह, बढ़िया उपाय है! अद्भुत है!" सभी मेधावियों ने उसकी सराहना की।

मंत्री ने डरते-डरते राजा के पास पहुँचकर निवेदन किया–"महाराज, इस बार हमने बढ़िया उपाय सोचा है।" यह कहते सारी बातें राजा को सुनायीं।

"इस बार तुमने बढ़िया उपाय सोचा है। आज तक यह अक़्ल कहाँ घास चरने गयी थी? चर्मकारों को बुला भेजो।" राजा ने कहा। सारे राज्य में यह ढिंढोरा पीटा गया कि फलाने समय तक देश के सभी चर्मकार राजमहल के बाहर जमा हो जायें। ढिंढोरा सुनकर सैंकड़ों चर्मकार राजमहल के पास आ पहुँचे।

"तुम सब लोग मन लगाकर सुनो। जहाँ-जहाँ मनुष्यों का संचार होता है। वहाँ चमड़ा बिछाने के लिए कितने लाख

चमड़े चाहिये । इन चमड़ों को बिछाने के लिए कितना समय लगता है? कितना खर्च होगा! इसका हिसाब तुम लोग मुझे कितने दिनों में दे सकते हो? सारा काम पूरा करने में कितना समय लगता है?" राजा ने चर्मकारों से पूछा ।

एक बूढ़े चर्मकार ने नम्र स्वर में कहा–

"महाराज, पहले उन सभी रास्तों की नाप लेनी होगी, तब यह हिसाब लगाना है कि कितने चमड़े बिछाने होंगे! उन सभी चमड़ों के जमा होने तक इंतज़ार करना होगा । यह काम दिन और हफ़्तों में पूरा होने का नहीं ।"

राजा ने मंत्री की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखा । राजा की समझ में नहीं आया कि उसका मंत्री कोई भी उपाय करता है, वह अमल करने लायक़ नहीं होता ।

इतने में एक जवान चर्मकार ने उठकर कहा–"महाराज, मेरी एक बिनती है । मेरी समझ में सभी रास्तों पर चमड़े बिछाने के बदले चलनेवाले पैरों में चमड़े लगाना आसान काम है । आपकी आज्ञा हो तो मैं कल ही चप्पल का एक नमूना तैयार कर आपको दिखाऊँगा ।"

"अच्छा, कल तैयार कर ले आओ ।" राजा ने कहा । दूसरे दिन जवान चर्मकार ने चमड़े से चप्पल बनाकर राजा के सामने रखा । वे चमड़े इस तरह सिये हुए थे जिससे पैरों को आसानी से बांधा जा सके । राजा उन चप्पलों को पहनकर थोड़ी दूर चला । लौटकर अपने पैरों को देखा । उनमें मिट्टी न लगी थी ।

"शहबाश! तुम मेरे मंत्री से भी ज्यादा बुद्धिमान हो । तुम जल्द ही राज-दरबार के सभी सदस्यों के लिए ऐसे चप्पल बनवा कर ले आओ ।" राजा ने आदेश दिया ।

उस दिन से लेकर मनुष्यों ने चप्पल पहनने की आदत डाली ।

जनमेजय को अभी मालूम हुआ कि उसके पिता की मृत्यु कैसे हुई! बचपन में ही मंत्रियों ने उसे गद्दी पर बिठाया, युवा होते ही काशीनरेश की पुत्री वपुष्ठा के साथ उसका विवाह किया और मंत्रियों ने जनमेजय को सुझाया।

"महाराज परीक्षित की मृत्यु सर्प के द्वारा हुई है, इसलिए उदंकमहामुनि के कहे अनुसार सर्पयाग करना उचित होगा।"

जनमेजय ने सर्पयाग द्वारा तक्षक आदि सर्पों को अग्नि की आहुति देने का निश्चय किया। राजपुरोहितों और ऋत्विकों को बुलाकर सर्पयाग करने का विधान पूछा। ऋत्विकों ने बताया कि सर्पयाग केवल जनमेजय को छोड़ दूसरा कोई कर नहीं सकता।

याग के लिए आवश्यक सामग्री इकट्ठी की गयी। यज्ञशालाओं का निर्माण किया गया। एक ओर याग का प्रबंध हो रहा था, तब भावी जाननेवाला लोहिताक्ष नामक सूत ने बताया-"इस याग की पूर्ति होने से एक ब्राह्मण रोक देगा।"

जनमेजय ने उसकी चेतावनी को स्वीकार नहीं किया, बल्कि याग के समय लोहिताक्ष को यज्ञशाला के भीतर आने से मना भी कर दिया। इसके बाद जनमेजय ने वपुष्ठा महादेवी के साथ यज्ञदीक्षा लेकर यज्ञशाला में प्रवेश किया। सर्पयाग के लिए चन्डभार्गव होता के रूप में और पिंगल, उध्वर्थ तथा कौटसु उद्गाता नियुक्त हुए। याग का प्रारंभ

२. ययाति की कथा

साथ किया है। तुम अपने पुत्र अस्तीक को भेजकर यह याग बंद करा दो।"

माता का आदेश पाकर अस्तीक यज्ञशाला में पहुँचा। स्वस्तिवाचन करके, राजा, अग्नि और ऋत्विकों का स्त्रोत्र किया। जनमेजय अस्तीक को देख प्रसन्न हुआ और सदस्यों से कहा–"देखने में यह किशोर है, लेकिन कैसा ज्ञानी है। यह जो भी वर मांगेगा, दे दूंगा।"

तुरंत अस्तीक ने सर्पयाग को रोकने की इच्छा प्रकट की। जनमेजय ने समझाया कि इसके अलावा चाहे जो भी वर मांगो। लेकिन अस्तीक ने नहीं माना। बाक़ी लोगों ने भी जनमेजय को सलाह दी कि वचन का पालन करना चाहिए। इस तरह सर्पयाग रुक गया।

उस समय जनमेजय ने सबको दक्षिणा दी और आदर-सत्कार किया। वेदव्यास जब अपने शिष्यों के साथ वहाँ आ पहुँचे तब उसने वैशम्पायन के मुँह से अपने पुरखों का वृत्तांत सुना।

भारतवंश का मूलपुरुष वैवस्वत मनु है। वह अदिति का पोता है। वैवस्वत की पुत्री इला के पुरूरव नामक पुत्र हुआ। पुरूरव और ऊर्वशी के छे पुत्र हुए। उनमें आयु एक था, जिसके नहुष आदि चार पुत्र

हुआ। सब दिशाओं से सर्प आकर अग्निकुंड में गिरने लगे। देखते देखते उनकी संख्या लाखों तक पहुँची।

तक्षक घबराकर इंद्र की शरण में गया। "इस सर्पयाग में कुछ श्रेष्ठ सर्पों के लिए कोई भय न होगा। यह बात मुझसे ब्रह्मा ने पहले ही बतायी है। इसलिए तुम डरो मत। मेरे पास ही रहो।" इंद्र ने तक्षक को समझाया।

सर्पों का नाश होते देख वासुकी घबरा उठा। उसने अपनी बहिन जरत्कारी से कहा–"ऐसे संकटों से बचने के लिए ही तो हमने तुम्हारा विवाह जरत्कारु मुनि के

हुए। सौ यज्ञ करके नहुष ने इंद्र-पद भी प्राप्त किया। उसके छे पुत्र हुए, जिनमें ययाति दूसरा पुत्र है। बड़ा पुत्र यति तपस्या करके मुक्तिमार्ग की खोज़ में गया तो दूसरा पुत्र ययाति राज्य का शासन करने लगा।

ययाति के शासनकाल में दानवों का पुरोहित शुक्र था। देव और दानवों के युद्ध में जो दानव मरते, उनको शुक्र मृतसंजीवनी नामक मंत्र द्वारा जिलाया करता था। देवताओं का गुरु बृहस्पति संजीवनी विद्या नहीं जानता था। इसलिए देवताओं ने बृहस्पति के पुत्र कच को मृतसंजीवनी विद्या सीखने के लिए शुक्र के पास भेजा।

कच ने शुक्र की सेवा करते, उसकी पुत्री देवयानी को प्रसन्न किया। कुछ समय बाद दानवों को मालूम हुआ कि कच देवताओं के गुरु बृहस्पति का पुत्र है। एक दिन जब कच जंगल में अपने गुरु शुक्र की गायें चरा रहा था, तब उसको दानवों ने मारकर टुकड़े कर दिये और भेड़ियों का आहार बना दिया। यह समाचार मालूम होते ही शुक्र ने अपनी मृतसंजीवनी विद्या द्वारा कच को जिलाया। दूसरी बार जब कच देवयानी के लिए फूल चुनने गया तो दानवों ने फिर उसे मारकर समुद्र के जल में मिला दिया। देवयानी कच के वास्ते रोने लगी। शुक्र ने उसे फिर जिलाया।

तीसरी बार जब दानवों ने कच को मारा, तब उसे राख बनाकर उसे ताड़ी में मिलाकर शुक्र को पिलाया। इस बार शुक्र ने जब कच को जिलाया तब वह शुक्र के पेट में था। शुक्र ने लाचार होकर कच को मृतसंजीवनी मंत्र सिखाया और अपना पेट चीरकर बाहर आने और उस मंत्र के प्रभाव से शुक्र को फिर जिलाने की सलाह दी। कच ने वैसा किया।

कच जिस काम के लिए आया था, वह काम पूरा हो गया। इसलिए उसने गुरु से आज्ञा मांगी। तब देवयानी ने कच से पूछा–"मैंने तुमको प्रेम के कारण कई बार जिलवा दिया। इसलिए मेरे साथ विवाह करो।"

"ओह, तुम गुरु-पुत्री हो! मेरी बहिन जैसी हो! शादी कैसे?" कच ने कहा।

"तब तो मृतसंजीवनी तुम्हारे किसी काम में न आवे।" देवयानी ने कच को शाप दिया। "तुम्हारे साथ कोई ब्राह्मण विवाह न करे।" कच भी देवयानी को शाप देकर चला गया।

दानवों के राजा वृषपर्व की शर्मिष्ठा नामक एक पुत्री थी। एक दिन वह देवयानी के साथ कई सखियों को लेकर वन-विहार करने गयी। एक जगह उन्हें एक सरोवर दिखायी दिया। सभी नारियों ने अपने कपड़े उतारकर किनारे रखा और स्नान किया। तब हवा के झोंके से साड़ियाँ एक दूसरी से लिपट गयीं। जलक्रीड़ाएँ समाप्त कर जब वे नारियाँ बाहर आयीं तब जल्दबाजी में शर्मिष्ठा ने देवयानी की साड़ी पहन ली। देवयानी के लिए शर्मिष्ठा की साड़ी बच रही।

देवयानी ने घमंड में आकर शर्मिष्ठा को डांटा—"अरी, राक्षसी! मैं ब्राह्मण युवती हूँ। तुम्हारी साड़ी मैं नहीं पहनूंगी। मेरा नियम-भंग होगा। मेरी साड़ी तुमने क्यों पहन ली?"

"अरी भिखारिन, ज्यादा बको मत! तुम्हारा पिता मेरे पिता की भिक्षा पाकर उनके आश्रय में ज़िन्दा है। ऐसी हालत में मेरी साड़ी पहनने में तुमको एतराज़ किसलिए?" शर्मिष्ठा ने मुंह तोड़ जवाब दिया। इससे शर्मिष्ठा संतुष्ठ नहीं रही, बल्कि क्रोध में आकर उसने देवयानी को पास के एक कुएँ में ढकेल दिया और सखियों के साथ घर चली गयी।

थोड़ी देर बाद ययाति उधर से आ निकला। शिकार खेलने से वह थक गया था। प्यास बुझाने के लिए वह कुएँ के पास पहुंचा और उसने कुएँ में झांककर देखा। उसे देवयानी दिखायी दी।

"तुम कौन हो? कुएँ में कैसे गिर पड़ी हो?" ययाति ने देवयानी से पूछा।

"मैं दानव गुरु शुक्राचार्य की पुत्री हूँ। मेरा नाम देवयानी है। किसी कारण से मैं कुएँ में गिर गयी हूँ। मुझे कृपया बाहर निकाल लीजियेगा।" यह कहते देवयानी ने अपना हाथ बढ़ाया। ययाति ने अपने दायें हाथ से देवयानी को ऊपर खींचा और अपने रास्ते चला गया।

इस बीच में घूर्निका नामक एक दासी देवयानी को ढूंढ़ते वहाँ आ पहुँची। देवयानी नें उससे कहा—"अरी, मैं अब वृषपर्व के नगर में क़दम न रखूंगी। शर्मिष्ठा ने मेरे साथ जो अपचार किया है वह समाचार मेरे पिताजी को बताओ।" इसके बाद देवयानी ने सारी कथा सुनायी। दासी से समाचार पाकर शुक्राचार्य देवयानी के पास दौड़ा आया। बड़े दुख के साथ अपनी पुत्री का आलिंगन करते बोला—"बेटी,

तुमने शर्मिष्ठा के साथ कैसा अपकार किया? अकारण वह तुमको कुएँ में क्यों ढकेल देती?"

देवयानी ने अपने पिता से सारी बातें कहीं, यह भी कहा कि शर्मिष्ठा ने शुक्राचार्य के प्रति कैसे शब्द कहे। सारी बातें सुनकर शुक्राचार्य बोला-"बेटी, तेरे सिवा मेरे है ही कौन? तू नगर में न जायगी तो मैं क्यों कर जाऊँगा?"

इस बीच वृषपर्व ने सारा समाचार जान लिया और वह खुद वहाँ पहुँचकर बोला-"आप दोनों नगर में चलिये।"

"आपका व्यवहार हमको अच्छा नहीं लगता। आपके अनुचरों ने मेरे शिष्य को बार-बार मार डाला। आज आपकी पुत्री ने मेरी बेटी को कुएँ में ढकेलकर मार डालना चाहा। अब मैं आपकी सेवा नहीं कर सकता।" शुक्राचार्य ने स्पष्ठ शब्दों में कहा।

वृषपर्व ने शुक्राचार्य को मनाने की कोशिश की। तब उसने राजा से कहा-"आप देवयानी को मनवा लीजिये, उसकी इच्छा ही मेरी इच्छा है।" देवयानी ने राजा के पूछने पर बताया कि शर्मिष्ठा और उसकी दासियाँ देवयानी की दासियाँ बनकर रहने को तैयार हों तो वह नगर में जायगी। वृषपर्व ने यह बात मान ली। शर्मिष्ठा देवयानी की दासी बन गयी। देवयानी जो भी डांटती व गालियाँ देती, सब शर्मिष्ठा सहती रही। क्योंकि शुक्राचार्य के कारण दानवलोक ने बहुत उपकार पाये थे।

एक दिन देवयानी शर्मिष्ठा और अन्य दासियों के साथ उसी वन में गयी। उस दिन भी ययाति शिकार खेलते उस ओर आया। शर्मिष्ठा और देवयानी को देख ययाति ने पूछा-"तुम लोग कौन हों?"

देवयानी ने ययाति का नाम और वंश का परिचय पाकर कहा-"इस के

पूर्व एक बार आपने हाथ देकर मुझे कुएँ से निकाला था। उसी दिन हम दोनों का पाणिग्रहण हो गया। तब से मैं आपको ही अपना पति मानती हूँ।"

ययाति ने पहले संकोच किया कि ब्राह्मण युवती के साथ विवाह कैसे करे! लेकिन शुक्राचार्य ने उन दोनों के विवाह को स्वीकार किया और उनका विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ। शुक्राचार्य तथा दानव-प्रमुखों ने ययाति को अपूर्व उपहार दिये। देवयानी शर्मिष्ठा तथा दो हज़ार दासियों को साथ लेकर राजमहल में आयी। शर्मिष्ठा तथा अन्य दासियों के रहने के लिए अशोक वन के समीप में ययाति ने एक बड़ा महल बनवाया।

ययाति के द्वारा देवयानी ने यदु और तुर्वस नामक दो पुत्रों का जन्म दिया।

कुछ समय बाद शर्मिष्ठा अपनी हालत पर विचार करके बहुत दुखी हुई। इतनी उम्र के बाद भी उसका विवाह नहीं हुआ है। देवयानी दो बच्चों की माता भी बन गयी है। इसलिए उसने मन में सोचा–"देवयानी ने जैसे ययाति को वर लिया, वैसे मैं भी उनको क्यों न वर लूँ?"

एक दिन जब ययाति अशोकवन की तरफ़ आया तो शर्मिष्ठा ने उस से पूछा–"राजन, आप जब मेरी मालकिन के पति हैं; तब मेरे भी पति हैं। आप मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कीजिये। इस में अधर्म की कोई बात नहीं है।"

ययाति पहले यह सोच कर डर गया कि न मालूम शुक्राचार्य क्या कहेगा! फिर भी वह शर्मिष्ठा की इच्छा की पूर्ति करने का निश्चय करके उसके साथ गुप्त रूप में पति का व्यवहार करने लगा। ययाति के द्वारा शर्मिष्ठा के द्रुह्य, अनु और पूर नामक पुत्र हुये।

शर्मिष्ठा के माँ बनने का समाचार देवयानी को मालूम हुआ। वह शर्मिष्ठा के पास पहुँचकर बोली–"तुम्हारा जन्म उत्तम वंश में हुआ है, तुम सुशीला हो, लेकिन विवाह के बिना तुम्हें कैसे पुत्र हुये?"

शर्मिष्ठा ने लज्जा से सर झुकाकर उत्तर दिया–"जिस दिन मैं ने ऋत स्नान किया, उस दिन एक महामुनि ने आकर मुझे पुत्रदान किया।"

"वह मुनि कौन है? उसका वंश क्या है?" देवयानी ने फिर पूछा।

"उस महामुनि का दिव्य तेज देखते हुये मुझे वे सारे विवरण पूछने की इच्छा नहीं रही।" शर्मिष्ठा ने कहा।

देवयानी संतुष्ठ हो गयी।

एक बार ययाति और देवयानी शर्मिष्ठा के निवास पर पहुँचे। शर्मिष्ठा के पुत्रों में ययाति की रूप-रेखाएँ देख देवयानी ने उन बच्चों से पूछा–"सच बताओ, तुम्हारे पिता कौन हैं?" तब उन बच्चों ने ययाति की ओर संकेत किया।

देवयानी शर्मिष्ठा को बुरा-भला कहने लगी–"राक्षसी, तुम मेरे ही साथ द्रोह करने तैयार हो गयी?"

शर्मिष्ठा ने दृढ़ स्वर में जवाब दिया–"मैंने अधर्म रहीं किया है। तुमने राजा को जैसे वर लिया, वैसे ही मैंने भी वर लिया। तुम मुझसे बड़ी हो और ब्राह्मण युवती हो, इसलिए मैं तुम्हारा आदर करूँगी। लेकिन ये राजर्षि हैं, इसीलिए मैंने बताया था कि एक ऋषि के द्वारा मैंने ये बच्चे उत्पन्न किये हैं।"

इस पर देवयानी ने ययाति से कहा–"आपने मेरे साथ द्रोह किया है। इसलिए मैं आपके पास नहीं रहूँगी।" यह कहकर उसने सीधे अपने पिता के पास जाकर सारा बृत्तांत सुनाया। शुक्राचार्य ने ययाति को बूढ़े हो जाने का शाप दिया।

[२]

मोहनचन्द गांधी ने कहीं पढ़ा था कि दांपत्य जीवन बहुत पवित्र होना चाहिये। पति को पत्नी के प्रति जैसे कठोर व्रत का आचरण करना चाहिये, पत्नी को भी पति के प्रति वैसे पतिव्रत्य का आचरण करना है। गांधीजी अपनी पत्नी को कहीं जाने नहीं देते थे। मंदिर में जाना हो तो भी उनकी अनुमति लेकर जा सकती थीं। कस्तूरबा इन कठिन नियमों को सहन नहीं कर सकीं और उन्होंने गांधीजी का विरोधकर सत्याग्रह किया।

इसके कई सालों बाद गांधीजी ने स्वयं कहा था–"मैं अपनी पत्नी पर अधिकार जमाने गया और उनसे सत्याग्रह करना सीख लिया। मेरी पत्नी को मेरी मूर्खता सहते देख मुझे लज्जा हुई। मैंने सोचा था कि मैं उन पर अधिकार जमाने के लिए पैदा हुआ हूँ। आखिर मैंने उनसे अहिंसा की रीति सीख ली।"

मोहन को बचपन में इस बात का घमंड था कि वह बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता। यह बात धीरे धीरे उसकी समझ में आयी कि बड़े लोग जो कुछ आदेश देते हैं, उनका अंधानुकरण करने से उसकी आज़ादी नष्ट होती जा रही है। उसने इसके प्रति "विद्रोह" किया। वैष्णव मत के अनुयायी गांधी-परिवार के लोग मांस खाना और चुरुट पीना महान पाप समझते थे। एक सहपाठी के प्रोत्साहन से मोहन ने छिपे-छिपे मांस खाना शुरू किया। लेकिन घर पर भोजन न करता तो माँ के कारण पूछने पर झूठ कैसे बोले? झूठ बोलना नामुमकिन था। इसलिए उसे माँस खाना छोड़ देना पड़ा।

इसी तरह एक दूसरे सहपाठी ने मोहन को सिगरेट पीना सिखाया। सिगरेट पीने के

मोहन ने बचपन में ऐसी ही गलतियाँ की जो मामूली तौर पर सब बच्चे किया करते हैं। लेकिन जब वह खुद यह सोचता कि नैतिक दृष्टि से मैंने यह पाप किया है, तब वह अपनी अंतरात्मा में दृढ़ निश्चय कर लेता कि मैं ऐसी गलती आइंदा कभी न करूंगा।" गांधी में अपनी उन्नति आप करने की उत्कंठा भारी मात्रा में थी। सब बच्चे प्रहलाद और हरिश्चंद्र की कथा को जानते हैं। लेकिन अनेक बच्चे उनको कल्पित कथाएँ समझ बैठते हैं। लेकिन मोहन को वे कथाएँ नीति कथाएँ जैसी लगतीं!
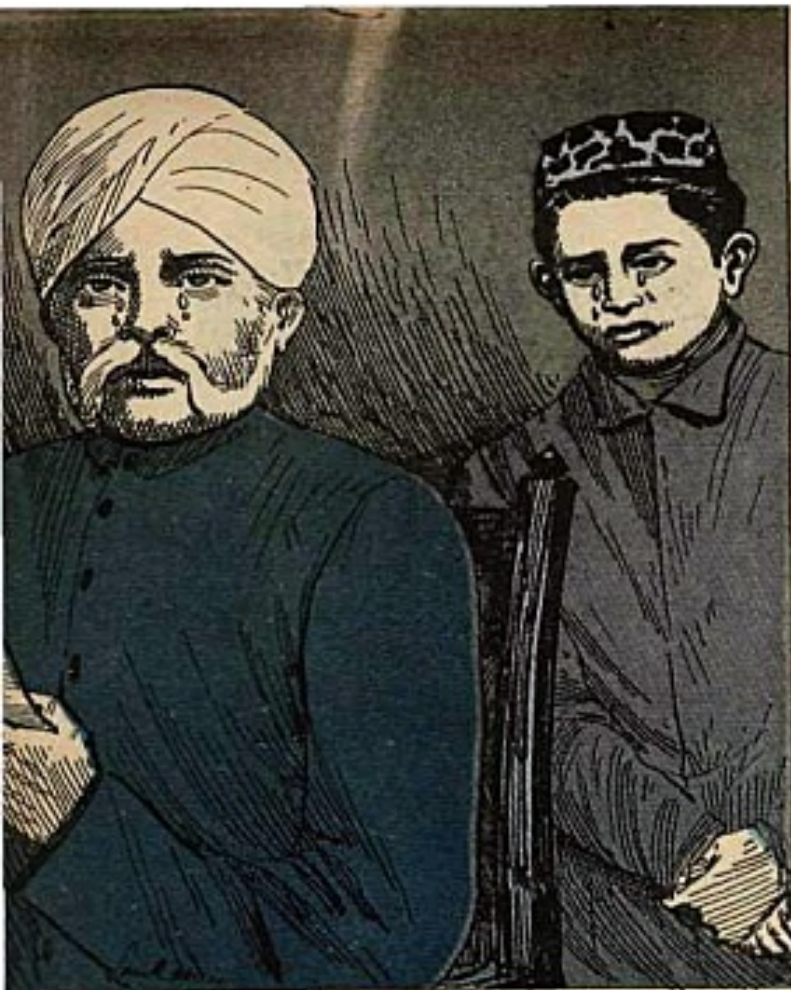
लिए पैसे चाहिये। चोरी करने पर ही पैसे हाथ लग सकते हैं। इसलिए उनकी आदत बहुत दिन तक नहीं चली। एक दिन दोनों ने सिगरेट न पीने की क़सम खायी।

एक बार मोहन ने थोड़ा सोना चुराया। यह काम उसने अपने भाई का कर्जा चुकाने के लिए किया। इस चोरी ने मोहन के दिल में हलचल मचा दी, आखिर उसने एक दिन अपनी गलती को स्वीकार करते हुये एक काग़ज़ पर लिख कर अपने पिता के हाथ दिया। दोनों की आँखों से आँसू निकले। पिता ने बेटे की गलती को माफ़ कर दिया।

गांधीजी ने १८८७ में मैट्रिक पास की। इसलिए उसको कालेज में पढ़ाने के लिए भावनगर में भेजा गया। लेकिन उस परिवार के हितैषियों ने समझाया कि गांधी को इंग्लैण्ड भेजना अच्छा होगा। बैरिष्टरी कराने से वे किसी भी राज्य के दीवान के पद पर नियुक्त हो सकते हैं। अपने बाप-दादों की तरह अपनी जिंदगी को आराम से बिता सकते हैं। पुराने ज़माने की तरह शिक्षा के बिना आज के युग में दीवान का पद मिलना नामुमक़िन है। गांधीजी को यह सलाह अच्छी लगी।

उनको भाव नगर के कालेज की शिक्षा ज्यादा कठिन मालूम हुई।

मोहन को इंग्लैण्ड भेजना हो तो रुपये चाहिये। भाग्यवश गांधीजी के बड़े भाई रुपयों का इंतज़ाम कर सकें। गांधीजी की माता पुतली बाईजी यह सोचकर डर गयीं कि उनका लड़का विलायत में जाकर पापों के गड्ढे में गिर जायगा। लेकिन गांधीजी विलायत में माँस, मदिरा और औरत को न छूने की क़सम खाकर इंग्लैण्ड चले गये। वे १८८८ सितंबर ४ तारीख को बंबई में जहाज़ पर सवार हुये। तब तक उनके पिता का देहांत हो गया था।

गांधीजी स्वभाव से कायर थे। इसलिए जहाज़ पर जितने दिन रहें, सबसे अलग एकांत में रहें। उन्होंने माँस और मदिरा न छूने की क़सम खायी थी। परोसनेवालों से यह पूछने में उनको डर लगता था कि इसमें क्या है? इसलिए यात्रा के समय वे मिठाई और अन्य घर से लायी हुई चीज़ें ही खाते रहें। यात्रियों ने गांधीजी को डराया कि "मांस न खाओगे तो जान से इंग्लैण्ड पहुँच न सकोगे।" तो भी गांधीजी प्राणों के साथ इंग्लैण्ड पहुँचे। वहाँ पर अकेलापन उनको खटकने लगा। जो कुछ अंग्रेज़ी जानते थे, वह भी बोलते समय लड़खड़ा जाती थी। घर पर वे अपनी प्यारी माता, पत्नी और लाड़ले पुत्र को छोड़ आये थे। उनका मन राजकोट के चारों तरफ़ मंडराने लगा। चारों तरफ़ का वायुमण्डल, वहाँ के आचार-विचार और भविष्य भी धुंधला सा लगने लगा। शाकाहर लेते हुये भूखा तो रहते थे, साथ ही लोगों के मज़ाक के भी वे शिकार हो गये। रातों में बिस्तर पर जाते ही अपनी इस बुरी हालत पर आठ-आठ आँसू रोया करते थे।
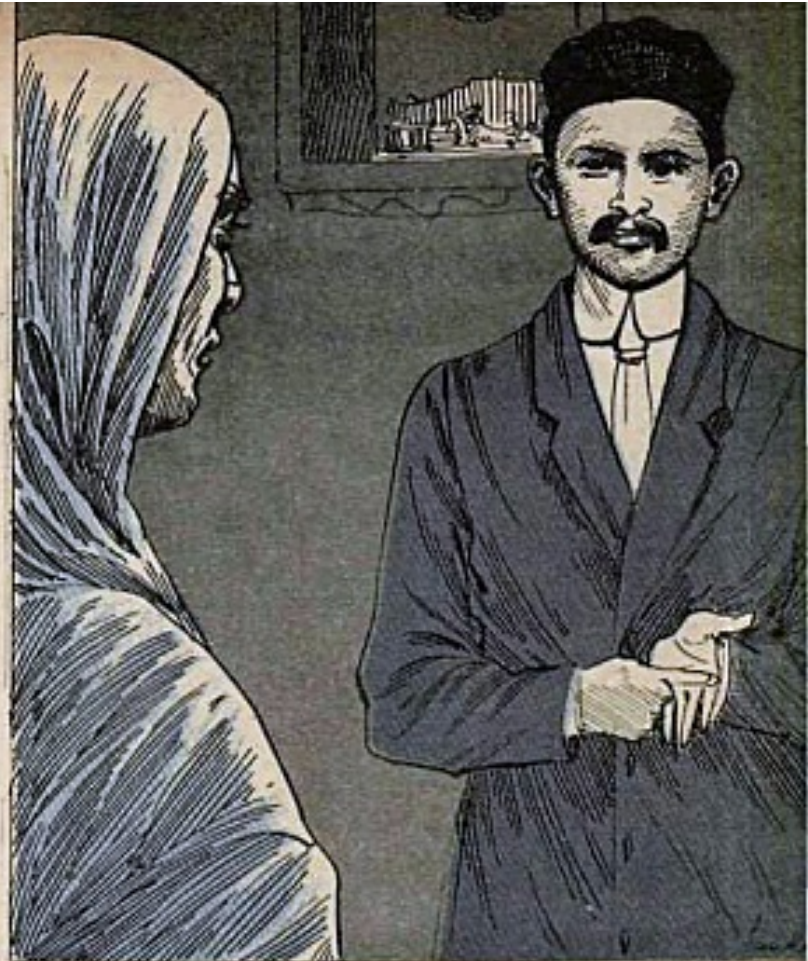
एक दिन वे लन्दन की गलियों में घूम रहे थे। उनकी दृष्टि 'पारिंग्डन स्ट्रीट'

के एक शाकाहार भोजनालय पर पड़ी। उनकी जान में जान आ गयी। उस दिन गांधीजी ने डटकर पेट भर खाना खाया। वहीं पर शाकाहार के महत्व संबंधी एक क़िताब खरीदकर पढ़ा। तब तक गांधीजी मांसाहार से आकर्षण रखते हुए भी शपथ खाने के कारण शाकाहारी थे। लेकिन उस क़िताब के पढ़ने के बाद उनका मन शाकाहार पर जम गया।

गांधीजी के मित्रों ने सलाह दी कि शाकाहार लेने से उनकी तबीयत खराब हो जायगी। पर गांधीजी ने यह साबित करने के लिए इंग्लीश 'जेंटिलमेन' की तरह पोशाक पहनने लगे कि शाकाहार लेने का उनका व्रत पागलपन नहीं है। सोने की जंजीरवाली घड़ी पहन ली। वक्तृता, नृत्य और संगीत भी ट्यूशनों के द्वारा सीख लिया। हाथ में चांदी की खोलवाली लाठी ले 'फैशनेबुल' तैयार हो गये। पढ़ाई को तिलांजली देनेवाले आवारे लड़के ही ऐसे फैशनेबुल होते हैं।

लेकिन गांधीजी की अंतरात्मा उनको सचेत करने लगी। वे चाहें जैसे भी वेश धारण करें, वे इंग्लीश 'जेंटिलमेन' नहीं बन सकते। वे सोचने लगे कि उनके बड़े भाई उनकी पढ़ाई के लिए रुपये भेजने में कैसी यातनाएँ झेलते हैं! कैसे कर्ज का भार सर पर ले रहे हैं, तीने महीने तक रुपये पानी की भांति बहाने के बाद गांधीजी ने एक एक पैसे का हिसाब लिखना शुरू किया। कमरा सस्ते में लिया, खुद रसोई पकाने लगे। बसों पर यात्रा करना छोड़ रोज दस-दस मील पैदल चलने लगे। इस तरह अपना मासिक खर्च दो पौंड से ज्यादा बढ़ने नहीं दिया। घर पर पैसे के लिए कम लिखने लगे। इस तरह किफ़ायती के साथ जीना उनकी अंतरात्मा को अच्छा मालूम हुआ।

संसार के आश्चर्य:

८९. एथेन्स का दुर्ग

एथेन्स के निवासियों को रोज़गारी का मौक़ा देकर बेकारी को भगाने के लिए पेरिक्लिस ने चन्दा वसूल किये और ई. पू. ४४७ में यह दुर्ग बनाया, इसमें एक मंदिर तथा सभा बुलाने के लिए आवश्यक निर्माण कराया। पर्शियनों ने इसके थोड़े भाग को ध्वस्त किया।

Photo by M. A. Mohan Rao

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

'बिंदिया माथे का श्रृंगार!'

प्रेषक:
प्रदीपकुमार - लुधियाना

Photo by K. S. Vijayaker

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'श्रम ही जीवन का सार!'

प्रेषक: प्रदीपकुमार - लुधियाना

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

जुलाई १९६९ :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजे!

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० मई १९६९ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

मई – प्रतियोगिता – फल

एप्रिल के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **बिंदिया माथे का शृंगार!**
दूसरा फ़ोटो: **श्रम ही जीवन का सार!**

प्रेषक: **प्रदीप कुमार,**
मकान नं. १४२९ गोकेल रोड, लुधियाना (पंजाब)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

दुखी राजकुमारी

सूर्य राजा के राज्य में
किसी के मन में
सुख नहीं··· फूलों-सी
सुन्दर राजकुमारी की
मधुर हँसी न जाने
कहाँ चली गई।

राजा की परेशानी का कोई ठिकाना नहीं।
अपने मंत्रियों की सलाह लेते पर सब बेकार...

कितने ही दामी उपहार लाकर दिये, लेकिन
राजकुमारी के चेहरे पर हँसी नहीं आई...

...अब राज्य में मानो दुख की छाया उतर आई हो

एक दिन, एक सुंदर राजकुमार घोड़े पर सवार उधर से जा रहा
था तो उसकी आँखें अचानक दुखी राजकुमारी पर पड़ी।

महल के अन्दर...

राज्य में जैसे खुशी की
एक लहर दौड़ गई

BB 4751